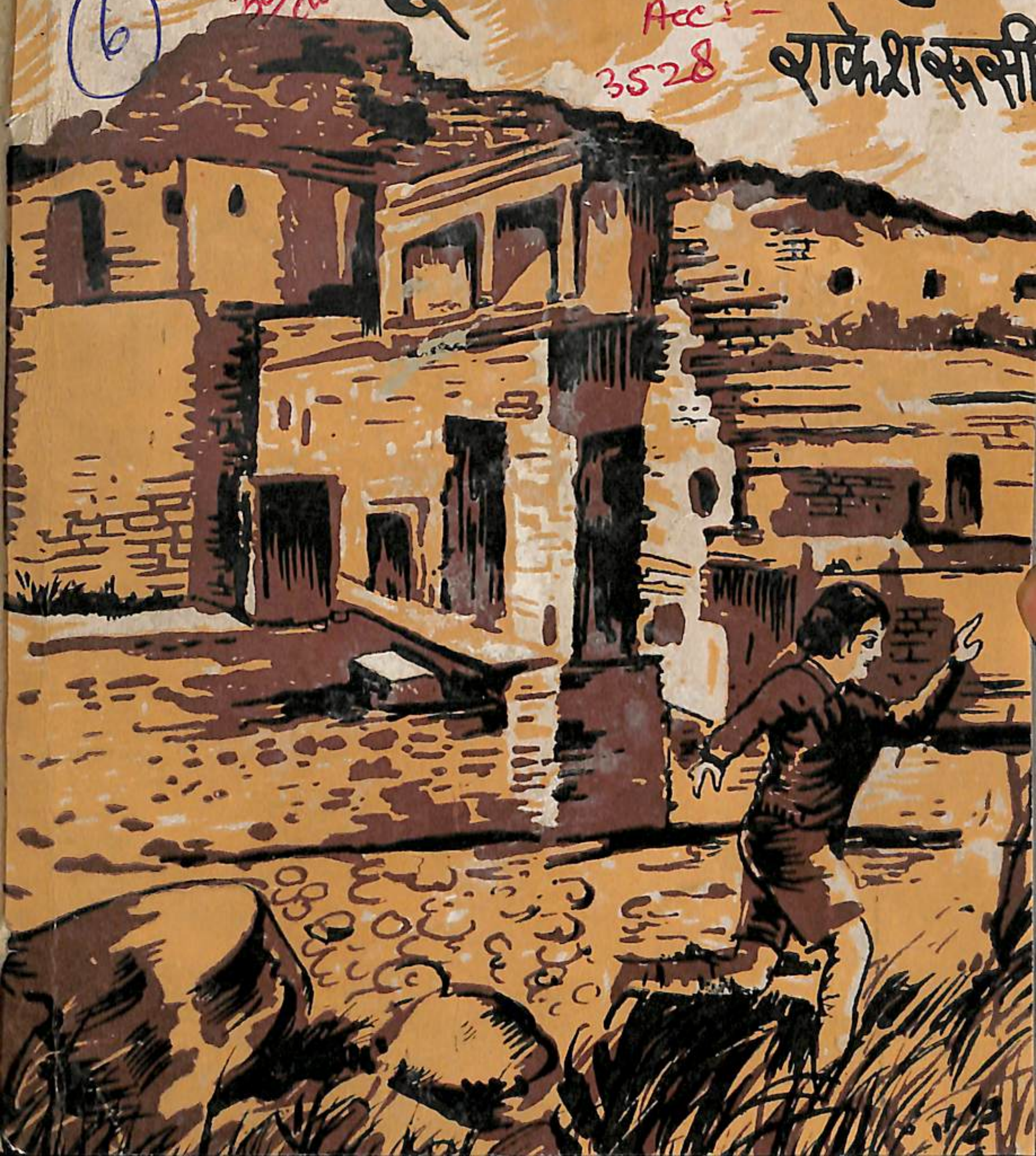
SOONA KHANDHER

सूना खण्डहर

राकेश



सूना खण्डहर
(बाल-उपन्यास)



नालंदा प्रकाशन,
३३/१ महरौली, नई दिल्ली-११००३०

सूना खण्डहर (बाल-उपन्यास) : राकेश रूसो

- प्रथम संस्करण १९८२
- लेखक : राकेश रूसी

- मूल्य : सात रुपये मात्र
- प्रकाशक : नालंदा प्रकाशन ३३/१, महरौली, नई दिल्ली-११००३०
- मुद्रक : जैमिनी प्रिंटिंग सर्विस, ४१७ पांडव रोड, विश्वास नगर, दिल्ली-११००३२

SOONA-KHANDAHAR (A Novel for Children) by Rakesh Roosi Rs. 7.00

घर का चोर

कुमार ने चौंककर नीचे देखा ! कहीं उसकी आंखें धोखा तो नहीं खा रही थीं ! उसे वे दो पैर दिखाई दिये जो एक मिनट बाद ही धीरे-से दरवाजा खुलने की आवाज के साथ गायब हो गए !

निश्चय ही नीचे कोई आदमी था जो ड्राइंग रूम में प्रविष्ट हो चुका था। पर वह आदमी कौन था ? कुमार झटपट बिस्तर से उठा। उसने अपने बड़े भाई राणा को पुकारा जो साथ वाले कमरे में सोता था। लेकिन कोई जवाब न मिला। उसने फिर पुकारा।

कोई जवाब न मिलने पर कुमार अपने को अकेला पाकर घबरा-सा गया। घबराता भी क्यों न ? एक तो अंधेरी रात और ऊपर से घर में कोई चोर !

कुमार ने सोचा शायद राणा गहरी नींद में होगा। अतः वह राणा के कमरे की तरफ बढ़ा। उसने धीमे से बन्द दरवाजे को धक्का दिया। दरवाजा चर्र-चर्र की आवाज के साथ खुल गया। कुमार ने धीमे कदमों से अन्दर कमरे में पैर बढ़ाये।

कमरे में कुमार की दृष्टि सब वस्तुओं से फ़िसलती राणा के बिस्तर पर जा लगी। बिस्तर पर राणा को न देख कुमार किसी भयानक आशंका से कांप उठा ! उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे सर्द हवा का झोंका उसके इर्द-गिर्द लिपट गया हो !

राणा बिस्तर से गायब ! यह कैसे हो सकता है ? कुमार सोचने लगा। पर यह सोचने का समय नहीं था। घर में कोई चोरी कर रहा है और वह सोच रहा है ! अब वह क्या करे ? मम्मी-पापा की मदद ले ? परन्तु मम्मी-पापा तो नीचे ड्राइंग रूम के पीछे वाले कमरे में सोते हैं। उनके कमरे तक ड्राइंग रूम को पार करके ही जाया जा सकता है।

कहीं मम्मी-पापा तो नहीं हैं ड्राइंग रूम में ? परन्तु यह सम्भव नहीं था क्योंकि अभी तक ड्राइंग रूम की बत्ती नहीं जली थी। अब कुमार को पूरा यकीन हो चुका था कि ड्राइंग रूम में कोई चोरी कर रहा है। अंधेरे में तो चोर ही घूमते हैं, चोरी करते हैं।

कुमार साहसी है। उसने हाल में ही गणतन्त्र दिवस पर वीरता एक्सप्रेस में भाग लिया था। उसने एक बच्चे को नदी में डूबने से बचाया था। वह अच्छा तैराक ही नहीं, बल्कि पढ़ने-लिखने में भी अव्वल है। उसने कई इनाम जीते थे। खेल-कूद में वह सबसे आगे रहता था।

पर ऐसे मौके पर बड़े-से-बड़ा दिल भी कांप जाता है। कुमार समय बेकार जाने देना नहीं चाहता था। वह दबे पांव नीचे ड्राइंग रूम की ओर बढ़ा। पर वह नीचे जाने से पहले अपनी रक्षा के लिये अपनी प्यारी हाकी लेना नहीं भूला था जिसके सहारे आज उसने कई मैचों में इनाम जीते थे।

अभी वह ड्राइंग रूम के पास ही पहुंचा था कि भीतर से कुछ गिरने की आवाज आई, शायद कांच का गुलदस्ता टूट गया था। अब तो कुमार और भी सक्रिय हो गया। उसके हाथ की पकड़ हॉकी पर सख्त हो गई।

कुमार ने देखा—दरवाजा थोड़ा-सा खुला हुआ है। वह यह देख आगे बढ़ा और बाहर से धीमे से बिना आवाज किये दरवाजा बन्द करके सांकल चढ़ा दी।

कुमार ने दरवाजे से कान लगाकर भीतर की आहट ली। अब अन्दर बिल्कुल शांति छाई हुई थी। तभी अन्दर एक विस्फोट हुआ। शायद शीशा या इंकपाट गिरी थी। कुमार ने अन्दाजा लगाया। इसके बाद अन्दर से सरकने की, चलने की आवाजें लगातार आने लगीं। कुमार को ऐसा महसूस हुआ मानों अन्दर वाला चोर किसी चीज को घसीट रहा है। पर किस चीज को?

अन्दर पलंग के नीचे पड़ी पेटी का ख्याल आते ही कुमार के कान खड़े हो गए। क्योंकि उसने अपनी मम्मी को उस पेटी में गहने और रुपये रखते देखा था।

अब पेटी खुलने की आवाज कुमार को साफ सुनाई दे रही थीं। तभी कुमार के दिमाग में एक युक्ति आई। कुमार ने साहस से काम लेते हुये दरवाजे की सांकल खोल दी और झटके से दरवाजा खोल कमरे की बत्ती जला दी।

कुमार किसी भी आपत्ति का सामना करने के लिए तैयार हो गया। लेकिन अन्दर कमरे में उसने जिस चोर को देखा, उससे वह क्षण-भर के लिए लड़खड़ा गया।

सामने राणा खड़ा था, उसका भाई! कुमार चौंककर बोला, "भैया तुम—तुम यहाँ कैसे?" राणा कुमार को देखकर एकबारगी तो हक्का-बक्का रह गया मानों किसी ने उसकी जुबान काट ली हो। उसका चेहरा भय से सफेद पड़ गया। वह अपने होठों पर जबान फेरते बोला—'त त तुम कुमार···यहां क्या कर रहे हो?'

'मैं चोर को पकड़ने आया हूं।' कुमार ने जवाब दिया।

'च···चोर···पर यहां कहां!' राणा चारों तरफ देखता अपनी घबराहट छुपाता

बोला।

'वह चोर मेरे सामने है,' कुमार बोला, 'मेरी आशंका सच निकली!'

'तुम्हारा क्या मतलब है?' राणा कुमार को घूरकर बोला।

'मतलब साफ है भैया—आज मुझे भैया कहते हुए भी शर्म आती है। आज तुमने अपने घर में चोरी करते हुये अपने मम्मी-पापा की इज्जत का भी ख्याल न रखा। मुझे मालूम था कि तुम एक दिन यह काम करोगे। आज तक तो मैं तुम्हारी हर हरकत अपने घरवालों से छुपाता रहा हूं परन्तु मुझे न मालूम था कि उसका अन्त मुझे तुम्हें रंगे हाथों पकड़कर आज देखना पड़ेगा।'

राणा कड़ककर बोला, 'आखिर तुम क्या चाहते हो? जाओ उठाओ मम्मी-पापा को और कह दो—सारी राम कहानी।'

'भैया, क्यों अपने को मिटाने पर तुले हो, छोड़ दो उन लड़कों की संगति जो तुम्हें बिगाड़ रहे हैं।'

'चुप रहो—एक लड़के को डूबने से क्या बचा लिया कि दांत खुल गये!'

'और तुम भी सुन लो भैया, तुम जिस अंधकार में डूब रहे हो उसमें डूबने से, मैं तुम्हें बचाऊंगा।'

'ठीक है, यह समय बतायेगा।' इतना कहकर राणा ऊपर अपने कमरे की तरफ चला गया और कुमार उसे जाता देखता रहा। उसने अपने मन में प्रण कर लिया कि वह सुबह मम्मी को सब बातें बता देगा।

उसके दिमाग में राणा के शब्द गूंजने लगे। उसने सामने टंगी दीवाल-घड़ी में समय देखा। रात के दो बजे थे।

राणा की करतूत

कुमार और राणा दोनों सगे भाई थे। दोनों की उम्र में सिर्फ एक वर्ष का अन्तर था। कुमार ग्यारह वर्ष का था और राणा बारह वर्ष का।

दोनों स्कूल में एक ही कक्षा में पढ़ते थे। राणा एक वर्ष फेल होने से अब कुमार की कक्षा में ही था। साफ-सुथरा रहन-सहन और देखने में दोनों ही सुन्दर थे।

उनके पिता सेठ दीनदयाल काफी अमीर थे। उनका बहुत बड़ा कारोबार था। नगर में उनकी प्रतिष्ठा और सम्मान था। रहने के लिये शानदार कोठी, गाड़ियां और जीवन की तमाम सुख-सुविधायें और आराम उन्हें प्राप्त थे।

इतना सब कुछ होते हुये भी कुमार और राणा की प्रकृति में जमीन-आसमान का फर्क था। इतने बड़े और अमीर घराने का लड़का होते हुये भी कुमार हरेक के साथ बड़े प्यार, मेल-जोल और भाईचारे सा बर्ताव करता था।

दूसरी तरफ राणा बड़े ही कर्कश और कठोर स्वभाव का लड़का था। अर्थात् वह अच्छाई और सच्चाई का उलटा रूप था। दोनों भाईयों के स्वभाव के इसी अन्तर के कारण कुमार के अच्छे मित्रों और शुभचिन्तकों की संख्या जहां अधिक थी वहीं राणा की अपने ही जैसे घमण्डी, जिद्दी और स्वार्थी लड़कों के साथ दोस्ती थी। इन्हीं लड़कों के साथ रहकर वह बहुत खुश था। सही अर्थों में वे उसके मित्र नहीं थे। उनमें से किसी का भी स्वार्थ जब आड़े आता था तो वे आपस की मित्रता को भूलकर अपने-अपने स्वार्थों में लग जाते थे। बहुधा उनमें आपस में झगड़ा और मारपीट भी हो जाती थी। कुछ दिनों के लिये उनमें बोलचाल बन्द हो जाती, मगर कुछ ही दिनों के बाद अपने ही किसी स्वार्थ के वशीभूत होकर वे फिर बोलने लगते।

कुमार के साथी कुमार से काफी प्रेम करते थे। कुमार के खास दोस्तों में से था —विजय जिसे कुमार अपना एक अंग समझता था। वह भी कुमार के साथ ही एक कक्षा में पढ़ता था। उसके पिता कुमार के पापा की फैक्टरी में ही काम करते थे। परन्तु कुमार कभी ऊंच-नीच नहीं मानता था। विजय और कुमार की गहरी दोस्ती से राणा बड़ा चिढ़ता था। इस बात को कुमार भी अच्छी तरह जानता था।

अपने भाई के स्वभाव को देखकर उसे बेहद कुढ़न होती थी। उसने कई बार राणा को समझाने की कोशिश की, मगर वह गुस्से में भरा उल्टे उस पर ही बिगड़ जाता था।

आखिर चिढ़कर राणा ने कुमार से बदला लेने की सोची। राणा जानता था कि कुमार न सही, विजय ही सही। आखिर कुमार विजय का एक अंग ही तो है। अगर वह विजय को कुछ कहेगा तो कुमार को जरूर कष्ट पहुंचेगा।

एक बार ग्राउण्ड में विजय खेल रहा था। उसी समय विजय ने बैट से बाल को जो मारा कि वह हवा में उठती सीधी कुमार के पिछवाड़े वाले बगीचे में गिरी। संयोग से वहां राणा बैठा था। जब विजय वहां बाल लेने गया तो वहां बाल ढूंढने लगा।

राणा इसी मौके की तलाश में ही था। वह विजय को देख अपनी आस्तीनें चढ़ाकर गुर्राया, 'नीच, पाजी, तेरी यह मजाल···शैतान !'

विजय यह देखकर डर-सा गया, क्योंकि वह राणा के स्वभाव से भली-भांति परिचित था। उसका चेहरा डर के मारे सफेद पड़ गया। विजय को चुप देखकर राणा और शेर हो उठा।

उसने आगे बढ़कर उसके बाल पकड़कर खींचते हुये उसे बड़े गुस्से और बेरहमी के साथ झिंझोड़ डाला। वह दांत भींचकर गुर्राता हुआ बोला : 'क्यों बे...यह तेरे बाप का बगीचा है, जो बाल इस तरफ फेंक दी। साले! अभी तो सिर पर नहीं लगी—अगर लग जाती तो...! विजय अपनी गलती मानता बोला, 'मैं इसके लिये क्षमा चाहता हूँ। मुझसे गलती हो गई है राणा भैया जो बाल इधर आ गई।'

'और इस टांग में जो चोट आयी है, उसका कौन जिम्मेदार होगा ?'

'राणा भैया, कह तो रहा हूं कि मुझसे गलती हो गई है।' विजय फिर से क्षमा-याचना करता बोला।

'अच्छा तो ले गलती की सजा!' कहते ही राणा ने अपने दाहिने पांव को उठाकर विजय के पेट में इतनी जोरों से घुटना मारा कि वह दर्द से बिलबिलाता हुआ, चीख मारकर तड़फ उठा।

विजय ने दोनों हाथों से पेट पकड़ लिया। उसकी आंखों से दर्द के मारे आंसू बह निकले।

राणा ने उसे जोरों से पीछे की ओर धक्का दिया और उसे घूरता, गालियां देता हुआ वहां से चला गया।

विजय के पेट में जोरों की लात पड़ी थी। घुटने की चोट से वह तड़फ उठा था। मारे दर्द के उसकी जान निकली जा रही थी। और उसे यूं छटपटाता देख निर्दयी राणा वहां से खिसक चुका था। विजय में इतनी हिम्मत न थी कि वह जरा उठ भी सके।

विजय के पीछे बगीचे में से न लौटने पर सभी बच्चे बगीचे में आ गये। जब विजय की यह हालत देखी तो सब मन-ही-मन घुटकर रह गए। विजय अभी भी दर्द से बिलबिला रहा था। सभी बच्चों ने उसे घर पहुंचा दिया।

उस समय कुमार घर पर नहीं था, जब यह घटना घटी थी। लेकिन जब उसे इस बात का पता चला तो उसे ऐसा लगा जैसे उसे खुद को चोट लगी है। उसे सिर्फ इतना बताया गया था कि विजय को चोट लगी है। उसी समय वह विजय के घर सरपट दौड़ पड़ा।

सामने ही विजय बिस्तर पर लेटा था। समीप ही बड़े चिन्तित और दुखी मुद्रा में उस लड़के के माता-पिता बैठे थे।

वहां की हालत देखकर कुमार उलझन में पड़ गया। अभी तक विजय के माता-पिता की नजर उस पर न पड़ी थी, परन्तु जब कुमार को देखा तो सब चौंक पड़े। वे सब आशंकित भाव से उसकी ओर देखने लगे।

कुमार को उनका यूं देखना अच्छा न लगा। वह विजय के माता-पिता के सामने

अपने आपको अपराधी समझ रहा था। उसे बात समझ न आ रही थी। वह पूछ बैठा, 'क्या हुआ अंकल, विजय को यह चोट कैसे लगी ?' यह पूछते ही उसके पिता बोले, 'लो तुम्हें यह भी नहीं मालूम···तुम्हारे बड़े भाई ने उसके पेट में घुटना मारा है। वह भी इसलिए कि बाल तुम्हारे बगीचे में चली गई थी। अपने पैर में चोट का तो उसने सिर्फ बहाना किया था।'

कहते-कहते विजय के पिताजी विजय की तरफ देखते चुप हो गये। विजय जो दर्द में बिलबिलाने के बावजूद भी कुछ बोलने से हाथ के इशारे से मना कर रहा था। यह सब कुछ कुमार भी देख चुका था। अपने बड़े भाई का नाम सुनते ही कुमार गुस्से से भर उठा और वह डाक्टर से बोला, 'डाक्टर, अब विजय की हालत कैसी है ? क्या मैं उससे बात कर सकता हूं ?'

डाक्टर बोला, 'हां, हां! क्यों नहीं, अब विजय नार्मल होता जा रहा है। बेचारे को घुटने से पेट में काफी चोट आयी है।'

यह सुनकर कुमार विजय के सिरहाने बैठता बोला, 'सब ठीक हो जायेगा, विजय ! अगर राणा ने तेरे साथ यह बर्ताव किया है तो आज ही घर में उसकी शिकायत करूंगा। अगर उसे घर में मार न पड़े तो कहना ! खुद को न-जाने क्या समझने लगा है ? किसी से सीधे मुंह बात नहीं करता। मैं घर में उसकी शिकायत करके उसका दिमाग ठिकाने लगा दूंगा। बुरा मानेगा तो माने, मेरी बला से। हूंह !!' विजय कुमार को प्यार से डांटते बोला, 'पगले, तू गुस्सा क्यों हो रहा है ? इसमें राणा का कोई दोष नहीं। अगर उसनें मारा भी तो मेरी गलती पर। मेरी बाल उसके पांव में जो लगी थी !' 'हूं !' कुमार घृणा से बोला, 'बाल लगने का मतलब यह तो नहीं कि राणा तुम्हें इतनी बेरहमी से मारे।' कुमार गुस्से में राणा भैया को सिर्फ 'राणा' कह रहा था।

कुमार ने प्यार और हमदर्दी से विजय के सिर पर हाथ फेरा। विजय कुमार का प्यार पाकर बोला, 'तुम्हें मेरी सौगन्ध कुमार, तुम घर में किसी से राणा भैया के बारे में कुछ मत कहना। चाहे राणा भैया हमसे बड़ा है, पर वह अभी नासमझ है। थोड़े दिन बाद जब बड़े होंगे तो समझने लगेंगे।'

कुमार गहरी सांस लेता हुआ बोला, 'न जाने वह दिन कब आयेगा ?'

विजय के कहने पर उस दिन तो कुमार घर चला आया था और उसने मम्मी-पापा से उसकी शिकायत न की थी, परन्तु राणा को जरूर समझाया था और उसने अपनी आदत के अनुसार उसे फटकार दिया था।

इसी तरह कई गलत हरकतें राणा ने की थीं। पर किसी-न-किसी वजह से कुमार मम्मी-पापा से यह सब बात छुपा गया था।

पर आज की बात !

आज की बात ने कुमार को विकल कर दिया था। वह लेटा हुआ सोच रहा था, न-जाने कब सबेरा होगा और कब राणा संभलेगा !

पापा की नसीहत

राणा और कुमार दोनों स्कूल पैदल ही जाते थे, क्योंकि स्कूल उनके घर के नजदीक ही था। लेकिन राणा कुमार के साथ कभी स्कूल नहीं जाता था। वह हमेशा अपने जैसे दोस्तों रणजीत, सुरेश के साथ जाता था।

कल रात वाली घटना कुमार के दिमाग में रह-रह कर घूम रही थी। वह सारी रात राणा के बारे में सोचता रहा था। आखिर में उसने निर्णय ले लिया था कि वह सुबह मम्मी को स्कूल जाने से पहले बतायेगा।

सुबह होते ही कुमार ने रात वाली सारी बातें मां को बताने का निश्चय किया। उसने सारी बातें शुरू से अन्त तक मम्मी को बता दीं। पहले तो उसकी मम्मी ने इस बात का विश्वास नहीं किया, लेकिन आखिर में यह सब सच मानकर मां बेहद दुःखी और नाराज हुई। राणा उस पल घर पर नहीं था—वह स्कूल जा चुका था, जबकि अभी स्कूल जाने का समय नहीं हुआ था। आज राणा स्कूल जल्दी चला गया था, क्योंकि रात वाली घटना से शायद उसे डर हो गया था, कि कहीं कुमार सब बातें मम्मी को न बता दे।

स्कूल का समय होने पर कुमार भी स्कूल चला गया। उसी शाम राणा के घर लौटने पर उसकी मम्मी उस पर काफी नाराज हुई। उन्होंने राणा के कान खींचे। रात को राणा के पिताजी के घर लौटने पर उसकी शिकायत की। वे भी राणा पर नाराज हुये। वे उसे नसीहत और सीख देने वाले उपदेश देते रहे, मगर इस डांट-फटकार और कान खींचे जाने पर गुस्से में भरे राणा पर उनकी दी हुई सीख और उपदेशों का कुछ असर नहीं हो रहा था। वे राणा को समझाते हुए बोले—

'बेटे ,तुझे क्या होता जा रहा है ? मैं तुझे इतने रुपये देता हूं। खाने-पीने की तेरी हर इच्छा पूरी करता हूं, तुझे किस बात की कमी है जो इस तरह की हरकतें कर रहा है ? मैं जानता हूं कि तू बुरा नहीं है। वह रास्ता बुरा है जिस पर तू चल रहा है। सुनो बेटा ! ध्यान से सुनो, अगर तुम ऐसी कच्ची उम्र में अपने को नहीं संभालते तो आगे जाकर तुम्हारा भविष्य क्या होगा ? तुम तो अपने में उन बच्चों की कहानी प्रदर्शित कर

रहे हो जो महसूस करते हैं कि उन्हें मम्मी-पापा प्यार नहीं करते, मनचाही नहीं करने देते। उन पर कोई मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालते हैं।'

परन्तु राणा चुपचाप सुनता रहा, बोला कुछ नहीं। पिताजी फिर से बोले, 'कुछ तो बोलो राणा'''कुछ तो जवाब दो। क्यों उन बच्चों की तरह हर बात नकारा करके अपनी जिन्दगी को बिगाड़ रहे हो?'

पर राणा चुपचाप सुनता रहा। वह बोलता कहां से? उसे कुमार पर क्रोध जो आ रहा था। सारी बात इस गुस्से में दबकर रह गई थी। उसने सोचा, कुमार ने ही उसकी शिकायत की होगी। इसी बात पर उसे गुस्सा बहुत चढ़ा था। अपना ही सगा भाई उसे शत्रु समान लग रहा था। मन-ही-मन वह कुमार को सबक देने की सोचने लगा।

सुबह होते ही कुमार झटपट स्कूल जाने के लिये तैयार हो गया। उसने नए इस्तरी किये हुये कपड़े पहने। जूते-मौजे पहने और बाल संवारे। मम्मी के पास जाकर बोला, 'मम्मी, मुझे जल्दी से नाश्ता दे दो, स्कूल जाने का समय हो गया है।''

मम्मी तो पहले से ही नाश्ता तैयार किये बैठी थी। उसने मेज पर गर्म दूध का गिलास और बिस्कुट रखते हुये कहा—'स्कूल जाने में तो देर है। पहले ठीक से नाश्ता कर ले। अपनी सारी चीजें बस्ते में रख लीं न? कुछ भूल मत जाना।'

कुमार अपना बस्ता देखकर दूध पीने लगा। वह दूध पीकर बोला, 'मम्मी, क्या राणा भैया स्कूल चले गये?'

'हां।' मम्मी ने जवाब दिया।

'अच्छा! भैया काफी जल्दी चले जाते हैं स्कूल—इतनी जल्दी जाकर क्या करते हैं?' 'अच्छा छोड़ो राणा की बातें,' मम्मी झल्लाती बोली, 'यह लो पचास पैसे, देख—आधी छुट्टी में भूख लगेगी तो कुछ लेकर खा लेना पर याद रहे, कोई फल या बिस्कुट ही खाना। कोई ऐसी-वैसी चीज लेकर मत खाना।'

पचास पैसे जेब में डालकर कुमार मम्मी की बात पर मुस्करा उठा। मम्मी आखिर सही कहती थीं। एक बार उसने कुमार को स्कूल के बाहर फुटपाथ पर बैठने वाले एक गन्दे-से लड़के से आमपापड़ व कटा हुआ खीरा खरीदते देख लिया था। तभी उसी दिन शाम को मम्मी ने उसे डांट लगायी थी और कहा था—'सड़क की धूल और मक्खियों से खुली हुई चीजों में बीमारियों के कीटाणु पहुंच जाते हैं। जो बच्चे ऐसी चीजें खाते हैं उनकी सेहत ठीक नहीं रहती और वह अक्सर बीमार रहते हैं।'

उस दिन से कुमार तो मान गया था—वह कभी भी ऐसी गन्दी चीजें अब नहीं खाता था, परन्तु राणा तो यह गन्दी चीजें न-जाने कब की खाता था, और अपने दोस्तों को खिलाता था। मम्मी यह देख राणा को भी समझाने लगी, पर उस पर जूं तक न

रंगो। थक-हारकर मम्मी ने स्कूल के हैडमास्टर जी से इस बात की शिकायत की। 'आप स्कूल के पास ऐसी गन्दी चीजें बेचने वालों को क्यों बैठने देते हैं ?' मम्मी ने कहा था।

हैडमास्टर जी ने कहा, 'आप बच्चों को पैसे क्यों देती हैं ? उन्हें आप आधी छुट्टी में खाने के लिये घर से ही कुछ बनाकर क्यों नहीं दे देतीं ? यदि उनके पास पैसे होंगे तो वे यहां से नहीं तो कहीं और से गन्दी चीजें खरीदेंगे। अगर पैसे हैं, स्कूल से भागकर सिनेमा भी देख सकते हैं।'

उस दिन से मम्मी ने राणा को पैसे देने बन्द कर दिये थे। और उसे घर से चीजें खाने को देती थी। और कुमार को पैसे देती थी। यह एक और बात थी जो राणा को और बातों की तरह बुरी लगती थी। वह समझता था कि मम्मी कुमार को उससे ज्यादा प्यार करती है। उसकी हर ख्वाहिश पूरी करती है। उसे बात-बात पर दुत्कार देती है। यह बात उसके भीतर जड़ होती जा रही थी।

परन्तु पिताजी उससे नाराज होते हुए भी उसे पैसे दे देते थे। पर फिर भी उसे कुमार न-जाने क्यों अपना दुश्मन नजर आता था ?

नासमझ साथी

कक्षा में विजय और कुमार जैसे ही घुसे, राणा का दोस्त सुरेश बोला, 'लो आ गये महा-रथी।' कुमार स्कूल जाते समय विजय को घर से लेता आता था और राणा पहले ही स्कूल पहुंच जाता था।

कक्षा में अध्यापक जी के न आने की वजह से शोर मचा हुआ था। सभी छात्र उछल-कूद कर रहे थे।

सुरेश की बात सुनकर राणा और रणजीत भी दोनों की तरफ देखने लगे। वे सब भी एक ही कक्षा में पढ़ते थे, क्योंकि वे भी राणा की तरह एक साल खराब कर चुके थे।

कुमार को चुप बैठा देख राणा ने रणजीत को आंख से इशारा किया। रणजीत राणा का मतलब समझ गया था कि कुमार को छेड़ने के लिये कह रहा है। भला राणा की बात कैसे टाली जाती ! रणजीत जोर से बोला—'कुमार का बच्चा—आटा खाये कच्चा।'

सुरेश भी बोला, "तेरे आटे में नोन, तुझे पूछेगा कौन ?"

यह सुनकर कुमार तो चुप रहा और विजय अन्दर-ही-अन्दर ताव खाए जा रहा था। परन्तु कुमार उसके भाव देखकर बोला, 'बोलने दो विजय, हमें कुछ नहीं हो रहा

…उनको अपने मन की भड़ास निकालने दो।'

'पर कुमार!' विजय बोला, 'इस तरह तुम चुप रहोगे तो वे और शेर हो जायेंगे।'

'पर विजय, उस दिन तुम ही तो कह रहे थे, वे सब नासमझ हैं…उन्हें अक्ल आ जायेगी।'

विजय अब खुद ही ठंडी सांस भरकर बोला, 'पर कब?'

इसका जवाब तो कुमार भी नहीं दे सकता था। वह उन तीनों के बारे में सोचने लगा…जिन्हें वह अच्छी तरह जानता था।

राणा के दोस्त सुरेश की मां मर चुकी थी। उसके पिता व्यापारी थे। वह व्यापार के सिलसिले में अक्सर नगर से बाहर रहते थे। घर में एक बूढ़ी बुआ थी। वह हर समय उसे अकेले रहने की वजह से लाड़-प्यार करती थी। वह नहीं समझती थी कि अनुचित लाड़-प्यार से बच्चों की आदतें बिगड़ जाती हैं। सुरेश को बचपन से पतंग उड़ाने की लत लग गयी थी। यह एक गन्दी लत ही उसे न लगी थी, बल्कि कई लतें उससे चिपट चुकी थीं। इसी कारण गली-मुहल्ले का लड़का कोई उससे बोलता न था। सिर्फ बोलते थे तो उसके दो ही दोस्त—राणा व रणजीत जो उसके सहपाठी थे।

राणा के पिता की तरह उसके पिता अमीर होने के साथ ही भले आदमी भी थे। मुहल्ले में सब उनका सम्मान करते थे। गली में उनका बड़ा रौब था। इसी कारण सुरेश का अपनी गली में बड़ा रौब था। लेकिन स्कूल में बात उल्टी थी। वहाँ तो उसी लड़के का रौब पड़ता था जो पढ़ने-लिखने में बहुत तेज है, खेल-कूद में अव्वल रहता है और अच्छी आदतों के कारण शिक्षकों का प्यारा बन जाता है।

इसी वजह से सुरेश का मन पढ़ाई में नहीं लगता था। स्कूल कई-कई दिन न जाता था… और सिरदर्द व कई बहाने बना स्कूल से छुट्टी लेकर रणजीत और राणा के साथ घूमता।

सुरेश को भी पिताजी जेब-खर्च के लिए काफी पैसे देते थे। तीनों के तीनों अपने पैसों से ऐश करते, मन-पसन्द चीजें खाते।

कई-कई दिन स्कूल में न आने पर कक्षा में जो पढ़ाया जाता था, उसका भी उन्हें ज्ञान नहीं होता था। और वे दूसरे लड़कों से पिछड़ जाते थे। अतः अपना समय बिताने के लिए वे दूसरे लड़कों के साथ लड़ते-झगड़ते रहते और उन्हें तंग करते रहते।

तीनों किसी-न-किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहते। वे समझते कि इसमें उनके साथी उनका मान करेंगे। लेकिन उनके साथी उनकी गप्पों का विश्वास नहीं करते थे। कभी-कभी तो वे उनका मजाक उड़ाने में भी नहीं चूकते थे। चिढ़कर वे लड़कों से मार-पीट करते तो वे सब शिक्षकों से जाकर शिकायत करते तो उनकी और हंसी उड़ती।

आइये अब रणजीत का परिचय प्राप्त कर लें। रणजीत एक गरीब घर का लड़का है। उसकी पढ़ाई का खर्च भी उसके पिता मुश्किल मे जुटा पाते थे। घर में खाने को भी रूखा-सूखा मिलता था। पहले वह इसी में सुखी और सन्तुष्ट रहता था। लेकिन स्कूल में बच्चों को तरह-तरह की चीजें खाते देखकर उसका भी मन मचलता। घर से वह पैसे मांगता। कभी-कभी मिलते भी। लेकिन रोज पैसे कहां से मिलते ? परिवार काफी बड़ा था। काफी बच्चे थे।

लेकिन रणजीत अब चटोरा बन गया था। उसे पैसे नहीं मिलते तो वह ऐसा साथी ढूंढने की कोशिश में रहता था जो अपने पैसों से उसे चाट-पकौड़ी, टौफी और आइसक्रीम खिला सके। इसी चक्कर में उसकी राणा के साथ दोस्ती हो गई थी। और अब रणजीत की ऐश थी। जो हुक्म राणा करता, वह उसे पूरा करता। जो वह खाने के लिए राणा से कहता, वह उसे खिलाता।

आधी छुट्टी की घंटी बजते ही सब बच्चे कक्षा में से निकल आये। विजय और कुमार केला और बिस्कुट खाने लगे। और राणा, रणजीत व सुरेश बाहर चाट-पकौड़ी, छोले-भटूरे इत्यादि गन्दी-गन्दी चीजों का मजा लेने के लिए चल दिए।

वे सब बातें करते हुए जा रहे थे। तभी राणा कुछ याद करके बोला, 'यार, उस रात गजब हो गया। मैं तो तुम दोनों को यह बात बताना ही भूल गया।'

'कौन-सी बात...?' दोनों उसके मुंह की ओर ताकने लगे, मानों अभी राणा कोई खजाना मिलने वाली बात कहने जा रहा हो।

राणा ने उनको अपनी चोरी की और डांट पड़ने की सारी बात बता दी। राणा के चुप हो जाने पर सुरेश बोला, 'ये माता-पिता जल्लाद होते हैं। हमें अपना गुलाम समझते हैं। जरा-सा कहा न मानो तो चमड़ी उधेड़ देते हैं। तू ही देख राणा, खुद तो तेरे पिता ने पिछले महीने बिल्कुल नई शेवरलेट कार खरीदी है। तू कहता था कि कुमार के लिये भी पिताजी ट्राइसिकल खरीदने वाले हैं। और तुझे देने के लिए कुछ नहीं। कहते हैं—बाजार की चीजें खाने से पेट खराब हो जाएगा! मैं इतना खाता हूं—मेरा पेट कहां खराब होता है? वे असल में हमें प्यार नहीं करते हैं। दूसरों से करते हैं। जितने पैसों की जरूरत हो उतने देते नहीं हैं। फिर चोरी न करें तो क्या करें ?'

रणजीत बोला, 'अगर मेरे पिताजी राणा की तरह मुझे डांटते तो मैं घर छोड़कर भाग जाता।' सुरेश भी बोला, 'मैं भी। पिछली बार पिताजी ने मुझे फेल होने पर डांटा था तो मैंने बुआ से साफ-साफ कह दिया था कि घर से निकल जाऊंगा। उसी दिन

बुआ पिताजी से खूब लड़ी। बस उसी दिन से पिताजी ने मुझे डांटना बन्द कर दिया। अब तो वह मुझसे बोलते भी नहीं।' राणा झल्लाकर बोला, 'अगर घर से भागोगे तो छिपोगे कहाँ ?'

सुरेश बोला, 'लो इसमें कौन-सी मुश्किल बात है—अरे वहीं, अपने विक्रम दादा का अड्डा है।'

'अरे हाँ !' यह सुन राणा की आंखें चमक आईं, 'मैं तो भूल ही गया था।'

रणजीत और सुरेश बोले, 'तो अब हमारी बातें भी तुम्हें समझ आ गई होंगी।'

'हां ! सचमुच तुम दोनों ठीक कहते हो। यह मम्मी-पापा बड़े स्वार्थी होते हैं। प्यार दूसरों से करते हैं और काम हमसे लेते हैं। सोचते हैं—बड़ा होकर बेटा उनको कमाकर खिलाएगा—हूं !' राणा ने गुस्से में अपने नथुने सिकोड़े।

'अच्छा राणा बता, तेरी चोरी की बात पापा को किसने बताई ?' सुरेश ने पूछा।

'अरे वही कुमार ने—और क्या।' कुमार बोला।

रणजीत बोला, 'लो देखो, छोटे भाई की करतूत—राणा, अगर मैं तेरी जगह होता तो बोलने की हिम्मत न करता। उसकी मार-मारकर धज्जियां उड़ा देता।'

'पर मैं क्या कर सकता हूं ?'

'कर क्यों नहीं सकते, अभी विक्रम दादा को कह दो—साले की हड्डी-पसली तोड़ कर रख दे।'

राणा बोला, 'यह बात बाद की है—तुमने विक्रम दादा का नाम लेकर मुझे याद दिला दिया—आज मैं उसके अड्डे पर जुआ खेलने नहीं जाऊंगा।'

'क्यों—?' रणजीत ने पूछा।

'अरे जाऊं कैसे ? अपने पास तो एक फूटी कौड़ी नहीं—सिर्फ आज के सिवा। जो आज खाने-पीने में खर्च हो जाएंगे।'

सुरेश बोला, 'अरे फिक्र क्यों करते हो—अगर तुम्हारे पास पैसे नहीं तो मैं लाऊंगा। चाहे मुझे चोरी करनी पड़े।'

कहकर तीनों यार पकौड़ी वाले की तरफ बढ़ गए।

दिन-पर-दिन बीतते गये। सुरेश और रणजीत के साथ-साथ राणा भी बेशर्म और निडर होता गया। पढ़ाई में तीनों का मन नहीं लगता था। परीक्षायें निकट आ रही थीं और वे जानते थे कि पास नहीं हो सकते। फेल होने पर उनके साथ क्या बीतेगी, यह सोच-सोचकर कभी-कभी वे चिन्तित अवश्य हो उठते थे।

उनकी आदतें और बिगड़ गई थीं। राणा ने फिर कई जगह से चीजें और रुपये उधार ले लिए थे और वह विक्रम के अड्डे पर जाकर रोजाना जुआ खेलता था। परन्तु विक्रम एक चालाक आदमी था। वह पुराना खिलाड़ी और एक अपराधी था। वह बच्चों को बहला-फुसला कर अपना दोस्त बनाता था और फिर अपराधी।

तकाजों से तंग आकर राणा ने अपनी घड़ी बेच दी। पिताजी से झूठ बोल दिया, 'घड़ी खो गई।' लेकिन वह जानता था कि झूठ छिपेगा नहीं। झूठ के पैर नहीं होते। पिताजी के क्रोध की बात सोचकर वह कभी-कभी काँप उठता था।

अब उसकी उद्दण्डता और बढ़ गई थी। वह घर का कोई काम न करता था। मम्मी को तड़ातड़ जवाब देता था और कुमार को गालियां देने से भी कभी नहीं चूकता था।

इसी बात पर मम्मी जो उसका थोड़ा-बहुत ध्यान रखती थी, वह भी छोड़ दिया था। कभी-कभी उसे भूखे ही स्कूल जाना पड़ता था और ज्यादातर बिना इस्तरी के कमीज और गन्दी नेकर पहननी पड़ जाती थी। मम्मी का यह व्यवहार देख अब तो राणा मम्मी को भी अपना दुश्मन समझने लगा था।

इधर पिताजी ने भी इन आदतों को देखते हुए उसको पैसे देने बन्द कर दिए थे। आखिर राणा क्या करता। अपनी लतों से मजबूर होकर उसने फिर से एक बार चोरी करने की सोची और पिताजी ने उसकी खूब पिटाई की। पिताजी और मम्मी को यह पता चल चुका था कि वह सुरेश और रणजीत की संगत से बिगड़ चुका है। पर राणा को घर में मार खाना अच्छा लगता था बजाए कि सुरेश और रणजीत की दोस्ती छोड़ना। मम्मी-पापा ने यह कई बार उसे समझाया था, पर उस पर जूं तक न रेंगी। उसे यह दोस्ती छोड़ना कोई भारी सजा लगती थीं।

राणा की तरह रणजीत और सुरेश का भी यही हाल था। वह दोनों भी घर से तंग आ चुके थे। उन्हें भी सारा दोष अपने माता-पिता और बहन-भाईयों का दिखाई देता था। यदि उन्हें अपना दोष दिखाई देता तो वे संभल सकते थे। कोशिश करने पर भी बुरी-से-बुरी आदत छूट जाती है। चोर और डाकू तक भले आदमी बन सकते हैं।

पर गधा पीट घोड़ा नहीं बन सकता। वे कभी इस तरह सोचते ही नहीं थे। उल्टे एक दिन तीनों ने बैठकर घर से भाग जाने की सलाह की। सुरेश बोला—

'मारो गोली ऐसे घर को जहां पर कोई सीधे मुंह बात नहीं करता, बात-बात पर डांट-फटकार और मार मिलती है। चलो बम्बई चलें। सुनते हैं, वहां जाकर छोटा-सा काम करने पर भी आदमी लखपति बन जाते हैं। हम भी कोई ऐसा काम करेंगे।'

राणा जोश में भरकर बोला, 'खूब सिनेमा देखेंगे, सैर करेंगे और बढ़िया-बढ़िया

चीजें खरीदेंगे। खूब मिठाई, चाय-पकौड़ी खाएंगे। और यहां घर पर हर समय या तो पढ़ो या घर का काम करो, नहीं तो मार खाओ।'

रणजीत भी उनकी हां-में-हां मिलाता बोला, 'बम्बई में बड़े-बड़े सिनेमा स्टार रहते हैं। फिल्मों की शूटिंग होती है। वहां लोग मुफ्त में जाकर सब फिल्मी स्टारों से मिल सकते हैं।'

सुरेश बोला, 'हां! और एक मजे की बात सुनो—वहां कोशिश करने पर फिल्मों में भी अवसर मिल सकता है।'

तीनों ख्यालों में डूबे बातें करते रहे।

राणा बोला, 'भई, यह सब तो तुमने तय कर लिया है—पर पैसे वहां तक जाने के लिए कहां से आएंगे?' 'अरे! इसका भी मैंने इन्तजाम कर रखा है।' सुरेश ने जवाब दिया।

'वो कैसे?' राणा ने पूछा।

'देखो भई राणा! अपन तो चोरी करने से अब रहे। अब तो एक ही रास्ता है। अपना जो विक्रम दादा है न, उससे मैंने बात कर ली है।'

'कैसी बात?' राणा उत्सुकता से बोला।

'अब हमें पैसों के लिए चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। हम विक्रम दादा के यहां थोड़े महीने काम कर लेंगे और फिर पैसे कमा कर बम्बई चलेंगे।'

'अरे वाह! क्या यह सच है?' रणजीत और राणा की आंखें चमक उठीं।

सुरेश गर्वीली मुस्कान से बोला, 'सुरेश जो करता है—वह सही और सच होता है। आओ मिलाओ हाथ, तो फिर पक्का!'

'पक्का—।' तीनों हाथ मिलाते खुशी से झूम उठे!

कुमार देख रहा था कि कई दिनों से राणा स्कूल में नहीं आ रहा है। आखिर कैसा भी हो, वह उसका भाई था। वैसे भी परीक्षाएं निकट आ रही थीं। अतः कुमार इस बात पर ज्यादा चिंतित था कि राणा का यह साल फिर से खराब न हो जाए।

आज भी रोज की भाँति राणा नहीं आया था। रणजीत और सुरेश के डेस्क भी खाली थे। वे भी गायब थे। आज फिर से राणा को कक्षा में न देख कुमार चिंतित हो उठा। यह देख विजय बोला, 'क्या बात है कुमार? तुम इतने परेशान और चिंतित क्यों नजर आ रहे हो?' पहले तो कुमार नहीं बताना चाहता था। पर विजय के बार-बार कहने पर उसे बताना ही पड़ा—'पता नहीं विजय, मैं क्यों परेशान हूं। यूं ही राणा के

बारे में सोच रहा था। न-जाने कहां-कहां स्कूल से गायब होकर घूमता रहता है ?'

'अरे हां ! याद आया—कल रात सुरेश के बापू हमारे घर आए थे।'

'क्यों—? क्या वह तुम्हारे बापू को जानते हैं ?' :

'हां ! वह पहले सुरेश के पिता के यहां काम करते थे।'

'अच्छा फिर ?'

'उन्होंने बताया कि उन्हें स्कूल से चिट्ठी आई है कि सुरेश ने स्कूल आना बन्द कर दिया है। फिर क्या था, मैंने उनके पूछने पर सब कुछ बता दिया, परन्तु उसके पिताजी इस बात पर चिंतित थे कि वे दोनों जाते कहां हैं। क्योंकि सुरेश के पिताजी रट रहे थे कि सुरेश अब तो घर में चोरी भी करने लगा है। पता नहीं वह पैसे कहां खर्च करता है ?'

यह सुन कुमार चौंके बिना न रह सका था। कुमार को कुछ सोचता देख विजय बोला, 'कुमार ! क्या तुम बता सकते हो कि वे तीनों कहां जाते हैं ?'

कुमार यह सुन झटके से बोला, 'नहीं तो। हां, पर मेरे दिमाग में अभी-अभी एक युक्ति आई है।'

'वो क्या—?'

'क्यों न हम इन तीनों का पीछा करें और देखें कि वे तीनों कहां जाते हैं ?'

'अरे वाह ! कल ही यह पक्का समझो।' विजय की आंखें चमक उठीं।

सुबह होते ही विजय और कुमार निश्चित स्थान पर पहुंच गये। दोनों आज अपने साथ खाना ले आये थे, क्योंकि पता नहीं कितनी देर लग जाए।

तभी दूर से राणा को आते देख विजय बोला, 'देखो राणा इधर ही आ रहा है।'

यह देखकर कुमार व विजय एक आड़ में हो गये। राणा उनको न देख सका था : वह आगे निकलता चला गया। अभी उसके साथ सुरेश और रणजीत नहीं थे।

राणा के आगे जाते ही विजय और कुमार आड़ से निकलकर धीमे-धीमे कदमों में राणा का पीछा करने लगे। वह हर कदम फूंक-फूंक कर रख रहे थे। वह राणा को अपने वहां मौजूद होने का आभास नहीं दिलाना चाहते थे।

आगे एक चौराहे पर पहुंच कर राणा रुक गया, मानो उसे किसी का इन्तजार हो। यह देख विजय और कुमार सामने एक पेड़ की आड़ से राणा की हर गतिविधि देखने लगे।

उन्होंने देखा, तभी सुरेश और रणजीत दोनों सड़क के बाईं तरफ से आ गए।

थोड़ी देर राणा से मिलकर बातचीत करते रहे और फिर चल दिए।

अब आगे-आगे वे तीनों थे और पीछे वह दोनों। अब तीनों सड़क छोड़कर बाईं तरफ उस पथरीले चट्टानी भाग की ओर जा रहे थे जो अक्सर सुनसान रहता था।

विजय और कुमार ने पीछे मुड़कर देखा। अब काफी दूरी रह गई थी। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे तीनों कहां जा रहे हैं ? परन्तु वह बहुत ही सावधानी से पीछा कर रहे थे, मानों सब कुछ जानकर ही दम लेंगे।

काफी पैदल चलने और कई मोड़ों के पश्चात् वे तीनों एक चट्टानी मोड़ पर ओझल हो गये। वह रास्ता अधिक ऊबड़-खाबड़ था। चारों तरफ चट्टानें थीं और उन चट्टानों के पीछे से एक झील दूर तक बहती चली जाती थी।

कुमार और विजय परेशानी से उस मोड़ पर जाकर रुक गये। उन्होंने चारों तरफ देखा पर उन्हें वहां कोई आदमी रहने तक के आसार नजर नहीं आ रहे थे। चारों तरफ पहाड़ अपना सिर उठाये खड़े थे।

पर वह हिम्मत हारने वाले नहीं थे। वह दोनों आगे बढ़ गये। हवा सांय सांय चल रही थी। झील के पानी की आवाज आ रही थी। अभी वह थोड़ा-सा ही चले थे कि विजय ने दूर एक मकान की तरफ इशारा किया और कुमार उस मकान को देख चौंक पड़ा।

मकान की हालत बहुत खस्ता थी। दीवारें गिरी हुई-सी प्रतीत हो रही थीं, पर दूर से स्पष्ट नजर नहीं आ रहा था. वह मकान पूरे का पूरा भूतिया मकान लग रहा था, जिसमें जीवन का आसार नजर नहीं आ रहा था। वैसे वह मकान काफी लम्बा और चौड़ा फैला हुआ था जिसके पिछवाड़े यह झील पहुंचती थी।

कुमार के कहने पर विजय उसके साथ मकान की तरफ दबे पांव बढ़ने लगा। पता नहीं कुमार को ऐसा लग रहा था जैसे कि वे तीनों इसी मकान में गए हैं क्योंकि उन्हें जमीन-आसमान तो निगल नहीं सकती थी।

मकान के निकट एक खिड़की के पास पहुंच कर दोनों रुक गए। खिड़की का एक पट खुला हुआ था। अब पास से मकान की दीवारें स्पष्ट नजर आ रही थीं। दीवारों का सीमेन्ट जगह-जगह से उखड़ा था। सचमुच दीवारें गिरी हुई प्रतीत होती थीं।

तभी खिड़की में से राणा, सुरेश व रणजीत की आवाजें सुनकर दोनों के कान खड़े हो गये। अपनी सफलता पर कुमार मुस्कराये बिना न रह सका। उसने विजय की तरफ मुस्कराते हुये देखा। विजय भी उसे देख मुस्करा दिया।

तभी एक भर्राई हुई आवाज सुन कर दोनों चौंक पड़े। यह आवाज उनके लिये नई थी। ऐसा प्रतीत होता था जैसे कोई जानवर गुर्रा रहा हो। सुरेश उस आवाज से

कह रहा था, "विक्रम दादा, हमने सोच लिया है। बस कल ही समझो"'हम तीनों तुम्हारे पास आ रहे हैं। जो काम करवाओगे करेंगे, और उसके बाद तो—ऽऽ हा हा—खूब ऐश करेंगे।" विक्रम भी हंसा था। उसकी हंसी भी गुर्राती-सी थी जो बाहर विजय और कुमार के कानों से टकरा रही थी।

तभी किसी के कदमों की आहट सुनकर विजय और कुमार एक चट्टान के पीछे छुप गए थे। वे बस इतना ही सुन पाए थे। विजय के कहने पर घर आते समय कुमार सोच रहा था :

सुरेश के कहने का मतलब क्या था ?

उधर दो दिन बीत गए। जब राणा घर नहीं पहुंचा तब उसके पिताजी ने उसकी इधर-उधर तलाश की। परन्तु राणा न मिला। रात होने लगी तो राणा के मम्मी-पापा ने पुलिस में रिपोर्ट लिखवाई, रिश्तेदारों को यह पूछने के लिए तार दिए कि राणा वहां तो नहीं पहुंचा है। पड़ौस में खलबली मच गई। घर में खाना बनने की बात तो दूर, चूल्हा भी नहीं जला। कुमार भी बहुत परेशान था। उसे भी बिलकुल भूख नहीं लग रही थी। पड़ोसियों ने उसे समझा-बुझा कर कुछ खिला दिया। लेकिन मम्मी-पापा ने अन्न का एक दाना भी मुंह में नहीं डाला। आखिर बच्चा कितना भी बिगड़ा हो वह मम्मी-पापा के दिल का टुकड़ा होता है। रोते-रोते मम्मी की आंखें सूज गईं। सारी रात यूं ही बीत गई।

दिन निकला तो स्कूल में पूछताछ की गई। राणा के पिताजी तब चौंके जब उन्हें मालूम पड़ा कि रणजीत और सुरेश भी घर से गायब हैं। और उनके माता-पिता भी स्कूल में उनको पूछने आ चुके हैं।

यह बात जब घर जाकर पिताजी ने बताई तो मम्मी पर जैसे वज्र गिरा था—और कुमार यह बात सुनकर सन्न रह गया था। वह सोचने लगा, कहां गए वे तीनों ? तभी उस दिन पीछा करने और वहां पर विक्रम दादा के साथ की गई बातों के शब्द कुमार के दिमाग में घुसने लगे। उसे ऐसा लगा, जैसे वे तीनों विक्रम दादा के पास ही हैं। परन्तु यह बात उसने अपने मम्मी-पापा को नहीं बताई और सलाह लेने के लिए विजय के घर की तरफ चल पड़ा।

एक दिन और बीत गया। परन्तु तीनों का कुछ मालूम न था। जब सुरेश और रणजीत

के पिताजी को स्कूल से राणा के गायब होने की खबर मिली, तो वह राणा के पापा के पास आए। अतः उन्होंने बातें करते हुए बच्चों के गायब होने का दुःख प्रकट किया और आखिर में तय किया कि इन तीनों का विज्ञापन बड़े-बड़े अखबारों में निकाला जाए।

बड़े-बड़े अखबारों में विज्ञापन दिए गए। साथ में तीनों के फोटो भी छपवाए। पता लगाने वाले को एक हजार रुपए का इनाम घोषित किया गया। सुरेश की बुआ कुमार के घर आकर उसके पापा से बोली, "किसी तरह मेरे सुरेश का पता लगवा दो। चाहे उसमें मेरी जान भी ले लो।" रणजीत की मां बोली, 'उसे छुडवा दो चाहे इस के बदले में मेरे जेवर ले लो। मुझे और कुछ नहीं चाहिए। बस मेरा लाल मुझे मिल जाए।' रोते-रोते उसकी हिचकियां बंध गईं।

रणजीत के पिताजी का बुरा हाल था। वह अपने को संभालें या दूसरों को समझाएं। रुंधे गले से उन्होंने रणजीत की मां से कहा, "तुम क्या सोचती हो कि मुझे रणजीत से कम प्यार है, चाहे मैं गरीब हूं और रणजीत को ढूंढने में मेरा बाल-बाल कर्ज से बिंध जाए, पर मैं उसका पता लगाकर छोड़ूंगा।'

सभी उदास-से बैठे थे। तभी मम्मी ने कुमार को पुकारा। पर कुमार तो विजय के घर जा चुका था।

शाम हो चली थी। हवा तेजी से चलने लगी थी। आकाश पर काली घटाएं, काले सर्प की तरह कुण्डली जमा कर बैठ गई थीं। शायद बारिश आने के आसार दिख रहे थे।

परन्तु किसी चीज की परवाह किए बिना विजय और कुमार उस पहाड़ी के नजदीक छुपे हुए थे, जहां से सामने खंडरनुमा मकान साफ दिख रहा था।

कुमार ने विजय को सारी बातें घर जाकर बता दी थीं और उस खंडरनुमा मकान में तीनों के होने का शक किया था। विजय ने भी उसकी बात समझ कर अपने शक को भी जाहिर किया था और दोनों घर से बिना बताए यहां आन पहुंचे थे। उनका ख्याल था कि अगर आज फिर से उन्हें अन्दर से उस दिन की भांति आवाजें सुनाई पड़ीं तो वह घर जाकर अपने पापा और पुलिस को बता देंगे!

उन्हें वहां बैठे काफी देर हो गई थी। लेकिन उन्हें अभी तक उस मकान के आस-पास कोई हलचल नजर नहीं आई थी। आखिर में कुमार झल्लाहट के स्वर में बोला, 'यार विजय, यहां तो कोई नजर नहीं आता।'

विजय बोला, "अरे उस दिन भी तो कोई नजर नहीं आया था। आओ उस खिड़की के पास चलते हैं।" कुमार ने कहा, "विजय, तुमने उस दिन का अनुमान लगाया

था। यहां उस विक्रम दादा के अलावा बहुत-से और आदमी भी हैं क्योंकि उस दिन जब हम खिड़की से आवाजें सुन रहे थे तो तुमने कई कदमों की आहट सुनी थी।"

"हां, हो सकता है ! विजय ने उत्तर दिया, मुझे तो यह मकान कोई बहुत बड़ा रहस्य लगता है। तुम ही सोचो, यह कालोनी से कितनी दूर यहां झील के किनारे सुनसान जगह पर बना है। आओ हम पहले ही पुलिस को इसके बारे में बता दें। वह अपने आप संभाल लेगी।" कुमार बोला, "अरे पागल हो गए हो क्या ? विजय, पहले हम अपने शक को यकीन में तो बदल लें। आओ उस खिड़की के पास चलते हैं।"

अभी वह उठ भी न पाए थे कि आकाश में जोरों से बिजली कड़की। यह आवाज सुनकर विजय और कुमार दोनों ही सहम गए। थोड़ी ही देर में हलकी बूंदा-बांदी शुरू हो गई थी और हवा थम गई थी। चारों तरफ एक सफेद पर्दा फैल गया था जिससे वह मकान अब अस्पष्ट हो गया था।

दोनों छिपते हुए उस मकान के पिछवाड़े पहुंच गए जहां पर झील का पानी बारिश की बूंदों की वजह से शोर कर रहा था।

दोनों खिड़की के पास जाकर रुक गए। उस दिन की भांति आज भी खिड़की का पट खुला हुआ था। कुमार ने अन्दर कमरे में झांका।

अन्दर कमरे में हलकी रोशनी फैली हुई थी। कमरे में एक पलंग एवं टूटी हुई मेज थी जिसपर एक खाली बोतल पड़ी थी। एक तरफ कुछ लकड़ी का सामान पड़ा था। उस दिन कुमार इन चीजों को देख न सका था। उसने इशारे से विजय को अन्दर कमरे में देखने के लिए कहा। विजय भी हर वस्तु को गौर से देखने लगा।

अन्दर से अब किसी प्रकार की भी आवाज नहीं आ रही थी। विजय कुमार से फुस-फुसाया', अब क्या किया जाए कुमार ?'

कुमार कुछ सोचता रहा, फिर बोला, 'हम अन्दर इस खिड़की की राह चलते हैं। जब आए हैं तो सबकुछ पता लगाकर जाएंगे। क्या पता वे तीनों इसी ओर किसी कमरे में हों।'

यह कहकर विजय और कुमार जैसे ही खिड़की पर चढ़ने लगे तभी किसी के कदमों की आहट सुनकर वे पलटे। पर काफी देर हो चुकी थी। तभी किसी ने उनके पलटने से पहले ही उनके सिर पर प्रहार कर दिया था और दोनों चकराकर पीछे खड़े व्यक्ति की बाहों में झूल गए थे।

तभी जोरों से बिजली कड़की और बारिश तेजी से बरसने लगी।

जब सूर्य की सुनहरी रौशनी उन दोनों की आंखों से टकराई तो विजय और कुमार को होश आया। उन्हें सारी बीती बातें याद आने लगीं कि कैसे उनके सिर पर किसी ने प्रहार किया और वह दोनों बेहोश हो गए। उन्हें बेहोश हुए काफ़ी देर हो गई थी।

वे दोंनो अब समझ गए थे कि इस समय वह शेर की मांद में बन्द हैं। अब उनका शक यकीन में बदल चुका था कि राणा, रणजीत, सुरेश तीनों यहीं हैं। तभी तो दुश्मन ने उन्हें बेहोश कर दिया है।

परन्तु उनका दुश्मन कौन था? क्या रणजीत, सुरेश और राणा या विक्रम दादा? क्या उन्होंने उन्हें खिड़की से झांकते देख लिया था?

ऐसे कई प्रश्न दोनों के दिमाग में गढ़मढ़ होने लगे। सचमुच! जो भी उनका दुश्मन था वह बहुत चालाक और सतर्क है, इसका अनुमान दोनों को सहज ही हो गया।

विजय और कुमार आपस में इस मुसीबत से छुटकारा पाने की सोचने लगे। परन्तु उन्हें कोई प्रकाश की किरण नजर नहीं आ रही थी। क्योंकि अभी तक उन्हें कोई आदमी अपने कैदखाने में नजर नहीं आया था। और न ही किसी के आने के आसार दिखाई दे रहे थे।

विजय ने कुमार से पूछा, "कुमार! हम तो यहां बन्द हैं पर तुम जानते हो, हमारे मम्मी-पापा पर क्या बीत रही होगी? एक तो तुम्हारे पापा को राणा के लापता होने का बहुत दुख पहुंचा है और ऊपर से तुम भी यहां कैदखाने में बन्द हो। घर से लापता हो। हमने यहां आके एक बहुत बड़ी गलती की है कि हम घर में कुछ यहां आने की बता कर नहीं आए।"

कुमार उसका उत्साह बढ़ाता हुआ बोला, ऐसे काम नहीं चलेगा विजय! हमें ऐसी परिस्थिति में खूब साहस और हिम्मत से काम लेना है। यदि तुम तीनों की मुक्ति चाहते हो तो तुम्हें फौरन यह घर वाली बातें त्याग देनी होंगी। विजय! अब यह सब छोड़ो और साहस से काम लो। देखो, अभी दिन शेष मालूम पड़ता है, रात होने पर हम यहां से छुटकारा पाने की कोई-न-कोई तरकीब निकाल लेंगे।

यह बातें सुनकर विजय की कुछ हिम्मत बढ़ी। इस तरह बातें करते, सोचते दिन बीत गया। रात आई, परन्तु अभी तक दोनों को कोई आदमी अपने कैदखाने में नजर नहीं आया था। दोनों सुबह से भूखे थे। पर ऐसी परेशानी में भूख किसको लगती है!

तभी उन्हें किसी के अपनी तरफ आने की आहट सुनाई दी। वे दोनों सतर्क हो गए। यह आवाज धीमे-धीमे उनके कैदखाने के दरवाजे पर आ कर रुक गई। तभी कुछ खट-खट हुई और दरवाजे के नीचे से एक हाथ आया जिसने दो थालियां अन्दर सरका दीं।

कुमार और विजय ने चौंक कर उन थालियों को देखा जिनमें एक तरफ कुछ सब्जी, चावल और सूखी रोटियां रखी थीं। उन्होंने दरवाजे को देखा, मानों अभी वह खुलेगा। पर दरवाजा पूर्णतः बन्द रहा। तभी कोई बाहर से गुर्राया, हमें मालूम हो चुका है कि तुम होश में आ चुके हो। सुबह से अब तक खाना न मिलने से तुम्हें नानी याद आ गई होगी। पर विक्रम दादा किसी को भूख से नहीं मारता है। यह खाना तुम खा लो। मैं अभी विक्रम दादा को खबर करके आता हूं।



यह आवाज सुनकर दोनों के कान खड़े हो गए। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि अभी तक सुबह से कोई आदमी उनके पास फटका नहीं और फिर उन्हें कैसे मालूम पड़ गया कि वह दोनों होश में आ गए हैं ?वह अभी विक्रम दादा को खबर करने गया है, पता नहीं वह उनके साथ क्या सलूक करेगा ?

दोनों बुझी और उदास आंखों से थालियों की ओर देखने लगे। पर उन्हें भूख कहां थी ! वह तो इस कैद से छुटकारे-बचने के उपाय सोचने लगे। दोनों फिर बैठकर कोई तरकीब सोचने लगे।

थोड़ी ही देर बाद किसी की बाहर से आहट सुनाई दी और दरवाजे के पास आकर रुक गई। इस बार आने वाला बाहर का दरवाजा और कुण्डी खोल रहा था।

तभी दरवाजा चर्र-चर्र की भयानक आवाज के साथ खुल गया और किसी ने कमरे में प्रवेश किया। अब विजय और कुमार उसे स्पष्ट देख सकते थे।

वह बहुत लम्बा-चौड़ा था। काला रंग। आंखें दहकते अंगारों की तरह थीं। उसका चेहरा बहुत भयानक था। विजय और कुमार उसे देख कर क्षण-भर के लिए सहम गए। वह उसे विक्रम दादा समझ रहे थे।

वह आदमी थालियों की ओर इशारा करता बोला, 'तुम दोनों खाना क्यों नहीं खाते ?' दोनों कराहते हुए बोले, 'हमारे पेट में दर्द हो रहा है। खा नहीं सकेंगे।'

'हूं !—तुम बहाना करता है। अभी विक्रम दादा यहां पर नहीं है। तुम्हीं क्या, सभी बच्चे पहले-पहले तुम्हारे जैसा ही बहाना करते हैं।'

उसकी बात सुनकर दोनों को यकीन हो गया था कि वह विक्रम दादा नहीं है और वह अभी कहीं बाहर गया हुआ है। उन्होंने सन्तोष की सांस ली। उसको यूं बातें करते देख कुमार का साहस बढ़ा। वह बोला, 'दादा, तो क्या यहां पर हमारे जैसे और बच्चे भी हैं ?'

'हां, वो तीन घोंचू, विक्रम का दोस्त ऊपर बन्द है। साला बम्बई जाएगा, हा-हा-हा···हा।' ठहाका मार कर बोला, 'वह विक्रम का काम नहीं करता। बम्बई कहां जाएगा ? हा-हा-हा-हा।

यह सुन कुमार की उत्सुकता जाग उठी। वह बोला, 'अच्छा दादा, उनका नाम क्या है ?'

तभी यह सुन वह कड़क कर बोला, 'चुप बे घोंचू ! ज्यादा मत बोल। क्या तू पुलिस का आदमी है। खाना खाता नहीं, फिर भी बोलता है।'

इतना कहकर उसने दोनों थालियां उठाईं और बाहर बड़बड़ाता चल पड़ा। अब उसकी पीठ उन दोनों की तरफ थी। दरवाजा भी खुला हुआ था। दोनों यह मौका

खाली हाथ जाने नहीं देना चाहते थे। कुमार ने विजय को इशारा किया और अगले क्षण ही दोनों ने उस पर छलांग लगा दी। वह आदमी इस अचानक हमले से लड़खड़ाया और उसके हाथ की थालियां गिरते-गिरते बचीं। परन्तु अगले ही क्षण वह संभल गया और थालियां नीचे फर्श पर रखकर, पलट कर उन दोनों के एक-एक घूंसा जमाया। दोनों इस वार से नीचे गिर पड़े। उसने आव देखा न ताव! दोनों को गुस्से में सामने पड़ी रस्सी से बांध दिया। आखिर वह दोनों कर भी क्या सकते थे। उनकी गलती पर उन दोनों के हाथ-पांव बांध दिए गए थे। वह गुस्से में बड़बड़ाता बोला, 'साला दोनों घोंचू! हाथी से लड़ने जा रहा था। चींटी की औलाद! अगर अब भागने की कोशिश की



तो साला, काले धन्धे की कसम, गोली से उड़ा दूंगा।' इसके बाद वह दरवाजा बन्द करके चला गया।

उसके जाते ही दोनों ने सन्तोष की सांस ली। इस कैद से छुटकारा पाने की एक

तरकीब तो निकल चुकी थी और उसके बदले में उन्होंने एक भारी मुसीबत मोल ले ली थी। पहले वह आजाद थे अब तो उनके हाथ-पांव बांधकर उन्हें डबल कैद मिल गई थी।

परन्तु कुमार साहसी था। तभी उसके दिमाग में एक युक्ति आई और वह विजय की तरफ सरकने लगा। विजय भी कुमार के कहने पर उसकी तरफ सरकने लगा। जब दोनों पास-पास आ गए तो कुमार ने विजय के हाथ की तरफ अपना मुंह बढ़ाया और उसके हाथ पर बंधी रस्सी की गांठ अपने दांतों से खोलने का प्रयास करने लगा। काफी प्रयत्न के बाद रस्सी की एक गांठ खुल गई।

कुमार का चेहरा इस कड़ी मेहनत के कारण पसीने से तर हो गया! पर अब कुमार की आंखों में एक अद्भुत चमक थी—ऐसी चमक जो मंजिल पाने पर दिखती है। अब उसे सफलता की किरणें दिखाई पड़ने लगीं। और फिर एक के बाद एक गांठ खुलती गई। फिर धीरे-धीरे विजय ने खुद गांठें खुलने पर अपना हाथ बन्धन-मुक्त कर दिया। थोड़ी ही देर बाद विजय ने खुद हाथ खुलने से अपने पांव आजाद किए और फिर कुमार को बंधन-मुक्त करने लगा। कुमार भी विजय के थोड़े से परिश्रम के बाद स्वतन्त्र हो गया।

अब उनके सामने समस्या थी बाहर निकलने की। उस कमरे में उन्हें कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था जिसके द्वारा वह यहां से बाहर निकल सकें। दोनों फिर से कमरे का निरीक्षण करने लगे।

एक तरफ कोने में लकड़ी का सामान पड़ा था। उसके साथ ही ईंटों का ढेर पड़ा था। एक टूटी मेज के अलावा वहां कुछ न था।

तभी दोनों की नजर ऊपर एक रोशनदान पर पड़ी जिसमें लम्बे-लम्बे शीशे के टुकड़े लगे थे। वह रोशनदान काफी ऊंचाई पर था। वहां उनका हाथ नहीं पहुंच सकता था। यह एक गम्भीर समस्या उनके सामने थी। अब कोई भागने का साधन दिखा है तो वहां तक पहुंच नहीं सकते थे।

इतने में विजय को कोई बात सूझी और उसने कुमार को कहा। कुमार और विजय थोड़ी ही देर में मेज के ऊपर ईंटों का ढेर लगाने लगे। विजय का ख्याल था कि मेज पर चढ़कर और ईंटों के ढेर पर पांव जमाकर उस रोशनदान तक पहुंचा जा सकेगा।

ईंटों का ढेर अब मेज पर लग चुका था। मेज की हालत भी खस्ता थी। वह भी चूं-चूं करके बोल रही थी। विजय ने नीचे से मेज दोनों हाथों से थाम ली और कुमार मेज पर पांव रखकर ईंटों के ढेर पर चढ़ा। अभी भी रोशनदान काफी ऊंचाई पर था, पर उन्हें किसी भी तरह वहां पहुंचने की कोशिश तो करनी थी।

कुमार जैसे ही ईंटों के ढेर पर चढ़ा वह असंतुलित होकर गिर पड़ा। उसके साथ ईंटें भी धड़ाम से गिर पड़ीं। इस 'धड़ाम' की आवाज के साथ दोनों सहम-से गए। सोचा, अब कोई आ जाएगा और फिर से उन्हें दो घूंसे मारकर बांध जाएगा-और फिर उनकी दूसरी तरकीब पर पानी फिर जाएगा।

उन दोनों ने आहट ली, परन्तु उन्हें किसी की आहट सुनाई न दी। यह देख उन दोनों की हालत ठीक हुई और दोनों फिर से ईंटें ठीक करके लगाने लगे। इस बार उन्होंने सारी ईंटें ढेर में शामिल कर ली थीं। शनैः शनैः रोशनदान की दूरी घटती गई। सारी ईंटें एक के ऊपर एक रख दी गईं।

अब कुमार फिर से विजय का सहारा लेते हुए ईंटों के ढेर पर चढ़ गया। एक-दो बार वह फिर गिरते-गिरते बचा। परन्तु कोई हानि नहीं हुई। उसकी आंखें अब रोशनदान की तरफ लगीं हुई थीं। वह डर भी रहा था कि कहीं कोई दरवाजा खोल कर अन्दर न आ जाए।

अब कुमार ईंटों के सब से ऊपरी भाग पर चढ़ा हुआ था। उसके हाथ दीवार से लगकर रोशनदान की ओर सरकने लगे। तभी रोशनदान का खाली हिस्सा उसकी पकड़ में आ गया। वह दोनों हाथों के बल उठा और रोशनदान से झांकने लगा। पर अभी एक समस्या और थी। रोशनदान में शीशे के लम्बे-लम्बे टुकड़े लगे थे। पर कुमार ने हिम्मत न हारी।

एक बार उसने नीचे देखा और बाहर से किसी के आने की आहट ली। परन्तु किसी की आहट उसे सुनाई न पड़ी तो फिर से वह अपने काम में लग गया और एक-एक करके शीशे के टुकड़ों को हटाता गया। उसने विजय को एक-एक करके शीशे के टुकड़े उछालने शुरू कर दिए।

शीशे के टुकड़ों के हटते ही शीतल हवा का झोंका उसके बालों से टकराया। उसके बाल उड़ने लगे। उसने रोशनदान के दूसरी तरफ झांका। बाहर सुनसान वातावरण था। चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा फैला हुआ था।

उसने झटके से रोशनदान की दूसरी ओर सिर निकाला और दूसरी तरफ उतरने का प्रयास करने लगा। पर नीचे कूदना सहज नहीं था। एक तो कूदने से आवाज होने का डर था दूसरा अगर कूद भी जाए तो जरूर कोई-न-कोई हड्डी-पसली टूटती। पर तभी कुमार के दिमाग में वह रस्सी घूम गई जिससे उन्हें अभी बांधा गया था। उसने विजय को रस्सी देने का इशारा किया। विजय ने कुमार को रस्सी थमा दी और कुमार रस्सियों को जोड़ने लगा। अब रस्सी काफी लम्बी हो गई थी।

इसके बाद उसने रस्सी का एक सिरा अपने हाथ में पकड़ लिया और दूसरा

स ामने दरवाजे की सांकल से बांध दिया।

अब कुमार के लिए दूसरी तरफ जाना आसान हो गया था। कुमार रोशनदान के बीच से रेंगता हुआ दूसरी तरफ रस्सी के सहारे लटकता हुआ उतर गया। उसके जाने के पश्चात् विजय भी दूसरी तरफ रस्सी के सहारे सही-सलामत पहुंच गया। दोनों के मु ख पर इस सफलता से खुशी छाई हुई थी। वहां जाने से पहले विजय ने रस्सी जेब में रखनी नहीं भूली थी।

दोनों ने चारों तरफ देखा। चारों तरफ अंधेरा था। कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था। अभी वह निर्णय ही कर पा रहे थे कि किस ओर जाया जाए कि एक ओर से खट्-खट् की आवाज आने लगी। सामने रोशनी का एक गोल दायरा नजर आ रहा था जो प्रत्येक क्षण आगे बढ़ता जा रहा था। वह सम्भवतः किसी टार्च की रोशनी थी।

"कोई इधर ही आ रहा है...।" कुमार फुसफुसाया। विजय ने झट से उसका हाथ पकड़ा और दूसरी तरफ दौड़ने लगा। खट्-खट् की आवाज दूर होती गई। अंधेरे में दौड़ने के कारण कुमार लड़खड़ा-सा गया। उसका पैर किसी डिब्बे से टकराया था। डिब्बा दूर तक अपनी कर्कश आवाज से खामोशी तोड़ता हुआ आगे लुढ़क गया। विजय के मुंह से हलकी-सी चीख निकली और वह पुनः कुमार को संभाल कर दौड़ने लगा। हांफते-हांफते दोनों का बुरा हाल हो गया था। अब उनसे और भागा नहीं जा रहा था।

एक जगह रुक कर वे पीछे की आहट लेने लगे। उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई तेजी से इसी ओर दौड़ा चला आ रहा है।

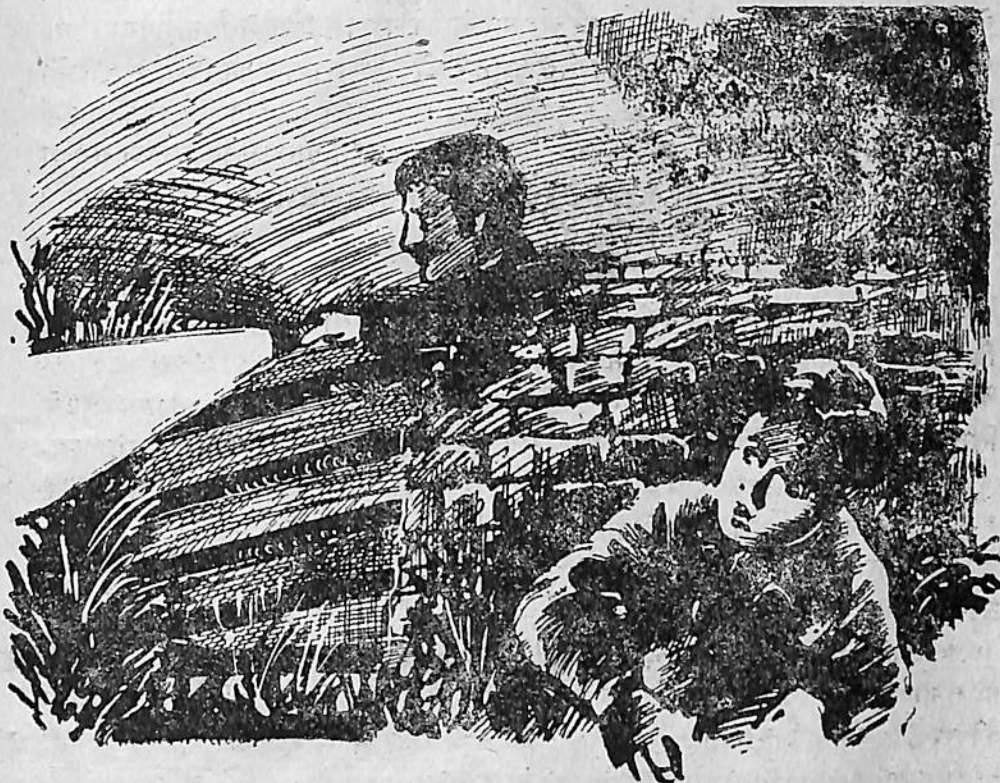
दोनों के चेहरे फिर भयातुर हो गए। 'यदि हम इस बार पकड़े गए तो फिर जिन्दगी-भर छुटकारा पाना मुश्किल हो जाएगा।' विजय ने कहा। कुमार बचने का उपाय सोचने लगा। धम्म-धम्म की आवाज और करीब आ गई। उनकी बातें भी अब स्पष्ट हो गई थीं। वे कई थे। कुमार और विजय समझ बैठे थे कि पीछा करने वाला अकेला है। अंधेरे के कारण उन सबका चेहरा नहीं दिख रहा था। सिर्फ हिलती-डुलती मानव-आकृति नजर आ रही थी।

उनमें से एक भर्राई आवाज में बोला, 'देखो वे भागने न पाएं। चारों तरफ से मकान को घेरा डाल दो। होशियारी से उन्हें पकड़ना है। अगर वे निकल गए तो हम सबका पुलिस कल्याण कर देगी।'

यह वही आदमी था जिस पर विजय और कुमार ने अभी थोड़ी देर पहले हमला किया था। वे दोनों उसकी आवाज से उसको पहचान गए थे। कुमार को समझ न आ रहा था कि किस ओर भागा जाए। तभी कुछ सोच कुमार बोला, 'विजय, तुम सामने उस टूटी दीवार के पीछे छिप जाओ और मैं दूसरी तरफ छिप जाता हूं।

यह कहते ही विजय अंधेरे का फायदा उठाकर उस टूटी दीवार के पीछे छिप गया, जिस तरफ कुमार ने संकेत किया था। और कुमार दीवार के दूसरे कोने में।

इतने में चारों ओर कुछ आदमी हाथ में टार्च लिए वहां आए और उस अंधेरे भाग में रोशनी फेंकने लगे। वह सुनसान अंधेरे में डूबा भाग रोशनी में जाग उठा!



विजय और कुमार दीवार के पीछे दुबके हुए अपने को अंधेरे में रखने का प्रयास कर रहे थे। वह वहां फैली रोशनी में दीवाल की आड़ से उनके चेहरे स्पष्ट देख सकते थे। वो बेहद डरावने लग रहे थे। आंखें लाल कंचों की तरह चमक रही थीं।

तभी तेज रोशनी का एक दायरा दीवाल की ओर धीरे-धीरे सरकने लगा। जैसे-जैसे दायरा दीवाल की ओर आता, वैसे-वैसे कुमार और विजय दूसरी ओर अंधेरे में सरकते जाते।

थोड़ी ही देर में रोशनी के दायरे अब दूसरी तरफ पड़ने लगे। कुमार ने देखा, अब रास्ता साफ है। उसने विजय को वहां से भागने के लिए हाथ से इशारा किया जो उसके पास ही बैठा देख रहा था। पर वहां खामोशी में सांस भी जरा तेज लो तो उसकी आवाज सुनाई पड़ जाती है। इसलिए कुमार ने इशारा किया था। पर अंधेरा होने की वजह से विजय उसका इशारा न देख सका। इस पर विजय का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए हल्की-सी सीटी मारी। पर उस आवाज से सारा काम फिर से बिगड़ गया। यह आवाज सुनकर वे लोग झटके के साथ पीछे पलटे। और वह आवाज की दिशा में रोशनी फेंकने लगे।

अभी कुमार और विजय दीवाल से आधा निकल भी न पाए थे कि उनका समूचा शरीर रोशनी के दायरों में आ गया। रोशनी में उनकी आंखें पलभर के लिए झपक गईं। यह देखकर सारे बदमाश उनकी तरफ दौड़ पड़े।

यह देख बद-हवासी में वे दोनों भी तेजी से एक तरफ दौड़ने लगे। तभी किसी पत्थर की ठोकर खाकर विजय गिर पड़ा। लेकिन पीछे से पास आती रोशनी देखकर, फिर संभलकर कुमार के साथ दौड़ने लगा।

सामने एक मोड़ था। मोड़ के दांई ओर एक अंधेरा गलियारा था। क्षण-भर के लिए मोड़ के पास दोनों रोशनी के दायरों से मुक्त हो गए। और उसी गलियारे में घुस-कर आगे दौड़ते चले गए।

पीछा करने वालों को गलियारे का ध्यान न रहा और वे आगे बढ़ गए। जब उन्हें दूर-दूर तक दोनों दिखाई नहीं पड़े, तो उन्हें अपनी भूल महसूस हुई। वे सब पलटकर उसी गलियारे में घुसे और दौड़ने लगे।

आगे जाकर गलियारा समाप्त हो जाता था। कुमार और विजय खुले स्थान में पहुंच गए थे जहां पर गलियारा समाप्त हो जाता था। और वह भाग मकान के पिछवाड़े की तरफ पड़ता था जहां पीछे झील थी।

वहां अंधेरा ही अंधेरा था। हाथको हाथ नहीं सूझ रहा था। वे आगे ही की तरफ दौड़ने लगे कि अचानक किसी चीज के ढेर से टकराकर दोनों उस चीज पर ही ढेर हो गए। 'ओह! यह तो बारूद की बोरियां हैं।' कुमार ने कराहते हुए कहा। बोरियों के भीतर से बड़े-बड़े हथगोले झांक रहे थे। कुमार ने सही अनुमान लगाया था। वह बारूद ही था।

उस पर गिरने के कारण कुमार के हाथ-पांव में जगह-जगह खरोंच आ गई थी जिससे खून रिसने लगा था। यही दशा विजय की भी हुई।

तभी कुमार चौंक उठा! उसके कान सजग हो उठे! पीछे से उसे दौड़ते लोगों की आवाजें अब अपनी तरफ आते सुनाई पड़ रही थीं। विजय ने भी आवाजें सुन ली थीं।

'अब क्या होगा?' विजय ने पीड़ा से होंट काटते हुए कहा। तभी कुमार पीछे बहती झील को देखकर बोला, 'विजय, तुम तैर सकते हो?' विजय ने कहा, 'नहीं तो—क्यों?'

कुमार नीचे झील की तरफ इशारा करता बोला, 'विजय, वह झील देखते हो, तुम अगर तैरना जानते तो हम उस झील में कूद पड़ते।'

विजय परेशान होकर बोला, 'फिर अब क्या होगा?' कुमार बोला, 'चलो देखी जाएगी—अगर तुम डूबने लगोगे तो मैं तुम्हें डूबने से बचा लूंगा। मैं एक अच्छा तैराक हूं।'

तभी विजय बोरियों के पीछे छिपते बोला, 'छोड़ो कुमार, आओ इन बोरियों के पीछे छिप जाते हैं—उन्हें मालूम नहीं पड़ेगा कि हम यहां छिपे बैठे हैं।'

तभी एकदम कुमार बोला, 'और अगर हम पीछे झील में दो बोरियां फेंक कर छिप जाएं तो?'

विजय उसकी बात समझ खुशी से उछल पड़ा, 'वह मारा!'

और अगले ही क्षण दोनों ने दो बोरियां झील के शांत जल में फेंक दीं। शान्त वातावरण में दो आवाजें एक के बाद एक गूंजीं! तभी दोनों बोरियों के पीछे छिप गए। क्योंकि भागने वाले अब आ पहुंचे थे।

तभी उन बदमाशों में से एक पीछे झील के जल पर टार्च मारता बोला, 'ओह! दोनों साले कूद गए। अब क्या होगा? विक्रम दादा हम सबको खत्म कर देगा।'

दूसरा बोला, 'अरे परेशान क्यों होता है?—वह दोनों झील में जिन्दा नहीं बच सकते हैं। इस झील में बड़े खतरनाक किस्म के जानवर रहते हैं। वह उन्हें चीर-फाड़ कर खा जाएंगे।'

यह सुन छिपे बैठे कुमार-विजय ने झुरझुरी ली!

तभी तीसरा बोला, 'फिर भी देख लेना चाहिए। अगर ज़िन्दा रहे तो बच नहीं पाएंगे। अगर मर गए तो परेशानी खत्म, हमारी बला से!'

इतना कह कर सब नीचे की तरफ चले गए। उनके जाने के पश्चात् दोनों ने सन्तोष की सांस ली। दोनों क्षणभर में ही अपनी पीड़ा भूल गए। कुमार डर रहा था कि बोरियां गिरने की आवाज शायद उन्हें सुनाई नहीं पड़ी होगी।

कुमार खुशी से चहका, 'विजय, अब हम भाग भी सकेंगे और राणा, रणजीत, सुरेश को खोज निकालेंगे।'

फिर दोनों उठे और दूसरी तरफ सरकने लगे। दबी हुई पीड़ा फिर से सजग हो गई। आगे बढ़ना दूभर हो गया। लेकिन अपने बड़े भाई को छुड़ाने की कल्पना कुमार के दिल में एक नया उत्साह भर रही थी।

पहले राणा लापता हो गया, अब कुमार !

पापा की परेशानी के मारे बुरा हाल था। उन्हें मालूम हो गया था कि विजय भी घर से गायब हो गया है।

पांच लड़के घर से गायब !

हर घर की हंसी-खुशी गायब हो गई थी। कुमार की मम्मी महीनों से बीमार-सी दिखाई देने लगी। पापा के चेहरे पर हर समय गम की घटाएं छायी रहतीं। मित्र, पड़ोसी, सम्बन्धी हरदम यही पूछते कि कुछ बच्चों का पता चला! लेकिन बच्चों का कोई पता न था। पता लगता भी कैसे ?

दूसरी तरफ पुलिस अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रही थी। उन्होंने पांचों लड़कों के फोटो हर शहर, हर नगर, हर गांव की पुलिस चौकी में पहुंचा दिए थे।

लेकिन इतना होने के पश्चात् भी उन पांचों का कुछ पता न था। अभी तक पुलिस इतना ही समझ बैठी थी कि कोई बच्चों को उड़ाने का गिरोह यह सब कर रहा है।

काफी आगे जाने पर कुमार ने थोड़ा रुक कर पीछे सर घुमाया। देख कर उसे खुशी ही हुई। वे आदमी नीचे उन्हें झील में तलाश कर रहे थे।

अब वे दीवाल के सहारे आगे बढ़ रहे थे। कुछ आगे जाने पर पुनः एक मोड़ आया। वहाँ भी काफी घना अंधेरा था। मोड़ पार करने के बाद वे एक खुली जगह में पहुंचे। पर यहां पर अन्धकार नहीं था। दूर तक सीढ़ी के पास हल्के पावर का बल्ब जल रहा था। अब उनका ध्येय नीचे के कमरों में राणा, सुरेश, रणजीत को तलाश करना था। दोनों छिपते-छिपाते यहाँ तक पहुंच चुके थे। अब वहां किसी प्रकार की भी आहट नहीं हो रही थी। चारों तरफ शान्ति थी पर उन्हें मालूम नहीं पड़ रहा था कि कौन-सा रास्ता है जो उन्हें नीचे पहुंचा सकता है।

सीढ़ी के पास पहुंचकर कुमार ने रोशनी में देखा। सामने दो मोड़ स्पष्ट नजर आ रहे थे। सामने दो मोड़ देख कर दोनों असमंजस में पड़ गए। किस ओर जाने से सफलता मिलेगी, यह कहना असम्भव था। दोनों विचार करने लगे।

कुमार ने खामोशी तोड़ते हुए विजय से कहा, 'हमारी सफलता और असफलता के दो मार्ग सामने हैं लेकिन हम यह नहीं जानते कि कौन-सा रास्ता किस ओर जाएगा ? समय भी कम है।' फिर वह विजय को समझाता हुआ बोला, 'ऐसा करो कि तुम दूसरे मोड़ से आगे बढ़ो और मैं पहले वाले मोड़ से आगे बढ़ता हूं। थोड़ी देर के बाद हम ठीक नीचे इकट्ठे हो जाएंगे। और रास्ते में क्या देखा, अपनी-अपनी रिपोर्ट देंगे। इस काम में सावधानी की बहुत ज़रूरत है। हमें पग-पग पर सूझ-बूझ और हिम्मत से काम लेना है। अगर फिर से उन बदमाशों की नजर में आ गए तो हम जरूर यहां फंस जाएंगे।'

इतना कहकर कुमार ने अपना कदम पहले मोड़ की तरफ बढ़ाया। फिर दोनों ने अपने हाथ हिलाये और 'गुडलक' कहकर अपनी-अपनी मंजिल की ओर बढ़ गए।



कुमार कदम फूंक-फूंक कर रख रहा था। उसे फिर अंधेरे का सामना करना पड़ रहा था। बाहर जो बल्ब जल रहा था, उस की थोड़ी-बहुत रोशनी आ रही थी, जिससे उसे काफी सहायता मिल रही थी। धीरे-धीरे रोशनी पीछे रह गई। अब चारों तरफ गहन अन्धकार था। वह अपने दोनों हाथों से रास्ते को टटोल-टटोल कर चल रहा था।

तभी उसके हाथ किसी लकड़ी की चीज से टकराए।

'ओह! यह तो दरवाजा है।' कुमार फुसफुसाया। उसने दरवाजे को टटोला। दरवाजा बन्द था। कुमार अन्धेरे में हाथ मार-मार कर सांकल ढूंढ़ने लगा। पर सांकल का अन्धेरे में पता नहीं चला। शायद दरवाजा दूसरी ओर से बन्द किया हुआ था। कुमार ने दरवाजे को खोलने की काफी कोशिश की पर वह नाकामयाब रहा।

अब क्या होगा? आगे बढ़ना जरूरी था। कुमार खड़ा-खड़ा सोचने लगा। तभी उसे कोई आहट सुनाई दी। किसी के जूतों की चरमर उस स्तब्धता में गूंज-सी रही थी। कुमार ने दरवाजे से कान लगा दिया। थोड़ी ही देर वाद सामने वाले दरवाजे के पीछे से आवाज आकर रुक गई थी। कुमार सतर्क हो गया।

आने वाला शायद उधर से दरवाजे को खोल रहा था। थोड़ी ही देर में सांकल खुलने की आवाज सुनाई दी। कुमार दरवाजे के दूसरी तरफ अन्धेरे में सांस रोक कर आने वाले का इन्तजार करने लगा।

तभी दरवाजा चींऽऽऽचीं की आवाज के साथ खुला और बातें करते हुए किसी व्यक्ति ने अन्दर कमरे में प्रवेश किया। कुमार ने बातचीत से अन्दाजा लगाया कि वे दो हैं। तभी दूसरा व्यक्ति भी अन्दर आ गया। वह सिगरेट पी रहा था। कुमार को उसकी शक्ल नजर आ रही थी। कुमार उस सिगरेट से उठने वाली रोशनी से अपने को बचाने का प्रयास करने लगा।

पर वे दोनों बातें करते हुए आगे निकल गए और कुमार को दूर किसी दरवाजे की सांकल खोलने की आवाज सुनाई दी। पर कुमार ज्यादा देर कर आई वस्तु को हाथ से जाने नहीं देना चाहता था।

कुमार ने मन-ही-मन भगवान को याद किया और जल्दी से दरवाजे की ओर भागा। पर दरवाजे की मजबूत चौखट को वह अन्धेरे में नहीं देख सका था जिससे उसका पैर उस चौखट से उलझ गया और वह धम्म से फर्श पर गिर पड़ा।

तभी वे दोनों आदमी आगे आए। एक ने दूसरे से पूछा, 'अरे, तुमने कुछ सुना?'. 'हां, सुना तो है, देखते हैं क्या है?' दूसरा झट से टार्च जला कर दरवाजे की तरफ देखने लगा। रोशनी घूमती रही। लेकिन अपने ऊपर रोशनी पहुंचने से पहले कुमार विना आवाज किए दूसरी तरफ कूद गया। जो एक बड़ा कमरा था।

कुमार में चीते की फुर्ती थी। यह फुर्ती उसे खेल-कूद से मिली थी।

टार्च की रोशनी चारों तरफ घूमती रही। परन्तु उन्हें कुछ न मिला। दोनों आखिर में हंस पड़े और बोले, 'होगा कोई गीदड़। चलो, देर न करो अभी आना भी है। कहकर वह दोनों आगे बढ़ गए।

उनके जाने के बाद उसने चैन की सांस ली। उसे हर कदम पर खतरा नजर आ रहा था। वह उठा और अपने कपड़ों पर से मिट्टी झाड़ने लगा। कई दिन वस्त्र न बदलने और न नहाने से उसके वस्त्र वैसे ही गन्दे हो चुके थे। वह फिर सोचने लगा। कहीं कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। उसने फिर अन्धेरे में टटोलना शुरू कर दिया, जिधर से वे दोनों अभी-अभी गए थे।

तभी उसके हाथ किसी दरवाजे को खोलने चले गए। उसने देखा, दूसरी तरफ हल्की-सी रोशनी फैली थी।

वह एक बहुत बड़ा कमरा था। जैसे कि पिछले कमरे थे। पर उसे कमरे में न कोई सीढ़ी दिख रही थी, न कोई दरवाजा।

फिर वे दोनों कहां से आए थे? तभी कुछ सोच वह उन दोनों का इन्तजार करने लगा। यह उनके आने पर ही रहस्य मालूम हो सकता था। वह सोचने लगा।

थोड़ी ही देर इन्तजार के बाद जूतों की चरमराहट गूंजने लगी। शायद वे दोनों आन पहुंचे थे। कुमार सतर्क हो गया और अन्धेरे भाग में दुबक गया।

एक ने टार्च जला रखी थी। कुमार उत्सुकता से उनके बाहर निकलने का रास्ता देख रहा था। उन दोनों ने एक बार कमरे का जायजा लिया और टार्च की रोशनी धीरे-धीरे रेंगती कमरे में बने एक हैन्डिल पर जा लगी। और फिर जो कुमार ने देखा, उससे उसकी आंखें आश्चर्य से फट गईं!

एक आदमी ने आगे बढ़कर वह हैन्डिल घुमा दिया। कमरे में घरघराहट की आवाज सुनाई पड़ी और कमरे का एक भाग उन दोनों को लेता नीचे धंसने लगा। उनके जाते ही फिर से घरघराहट उत्पन्न हुई और वह दूसरा भाग अपने स्थान पर आ गया। कुमार को यह सब कोई विचित्र संसार का आश्चर्य लग रहा था। उसने देखा हैन्डिल पुनः अपनी जगह आ गया है। वह फिर आश्चर्य से उस हैन्डिल को देखने लगा।

हां, उसने कहानियों में जरूर पढ़ा था कि बदमाश डाकू लोग दूर-दूर सुनसान भागों में रहते हैं। उसने अलीबाबा और चालीस चोर कहानी भी पढ़ी थी जिसमें 'खुल जा सिमसिम' कहते ही गुफा का दरवाजा खुल जाता था, पर वह आज खुद अपनी आंख से यह सब कल्पनाएं वास्तविक रूप में देखेगा, इसका उसे यकीन न था। लेकिन फिर भी कुमार को उसकी मनचाही चीज मिल गई थी। पर वह जल्दबाजी नहीं करना चाहता था। इन मौकों पर जितना सोच-विचार कर काम किया जाए, उतना ही फायदेमन्द होता है।

करीब दस मिनट के बाद वह आहिस्ते से उठा और उस हैन्डिल के पास पहुंचा। वह उन दोनों की तरह हैन्डिल को घुमाने का प्रयास करने लगा, पर वह टस-से-मस न

हुआ। यह देख कुमार को घबराहट हुई, कि कोई आ न जाए। उसका सारा शरीर पसीने से नहा गया। थोड़ी ही देर में वह हांफने लगा।

उसने थोड़ी देर के लिए हैंडिल घुमाना बन्द कर दिया। वह अपनी सांसों पर काबू पाने की चेष्टा करने लगा और फिर आखिरी बार पूरे दम से हैंडिल पकड़कर दूसरी ओर झूल गया। इस बार उसे सफलता मिली। आखिर परिश्रम ही सफलता की कुंजी है!

हैंडिल के घूमते ही घरघराहट हुई और उसी तरह कमरे का एक भाग नीचे धंसने लगा। कुमार हैंडिल छोड़ उस भाग के साथ-साथ नीचे जाने लगा।

थोड़ी ही देर में उसके पांव फर्श पर थे। उसके उतरते ही वह भाग ऊपर घरघाहरट की आवाज के साथ वापस जाने लगा।

कुमार ने देखा, वह एक लम्बा-चौड़ा गलियारा था। वह जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने लगा क्योंकि रोशनी में उसे डर था कि कहीं किसी की नजर न पड़ जाए। अंधेरे की सख्त जरूरत थी।

जैसे-जैसे वह आगे बढ़ रहा था वैसे-वैसे वह गलियारा बांई ओर मुड़ता जा रहा था। शुक्र था कि अभी तक कुमार को कोई बदमाश दिखा न था। कुमार भी सावधानी से क़दम बढ़ा रहा था। कभी-कभी पीछे मुड़कर भी देख लेता था कि कहीं कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है। परन्तु ऐसी अभी तक कोई बात नहीं हुई थी।

धीरे-धीरे उजाले की जगह आगे जाकर अंधेरा फैल रहा था। और आगे बढ़ने पर तो उजाले का नामोनिशान भी नहीं रहा। कुमार को कुछ राहत मिली और वह पूरे जोरों से आगे बढ़ने लगा। अंधेरे के कारण एक जगह वह फिर लड़खड़ाया, पर अपनी फुर्ती के कारण सम्भल गया। थोड़ी सी चूक हो जाने पर न-जाने उसकी दशा क्या होती!

लेकिन तभी चूक हो गई। सामने एक लम्बी सीढ़ी नीचे की ओर जाती थी। वहां अंधेरा होने की वजह से कुमार को वह सीढ़ी दिखाई नहीं पड़ी। जैसे ही उसने आगे पैर बढ़ाया, उसे लगा जैसे वह लड़खड़ाकर गिर पड़ेगा। लेकिन वह शीघ्र ही सम्भल गया और अपने हाथों से सीढ़ी का एक किनारा पकड़ लिया। वह बाल-बाल बचा था। फिर सम्भलकर नीचे उतरने लगा। सीढ़ी काफी लम्बी थी, नीचे उतरते हुए कुमार के पैर बुरी तरह दु:ख रहे थे। कमर में अत्यधिक थकावट की वजह से दर्द हो रहा था। लेकिन, उसे इसकी कोई परवाह नहीं थी। उसकी तो एक ही मंजिल थी—अपने भाई राणा व रणजीत तथा सुरेश को खोजना। वह यहां आन पहुंचा था, क्योंकि वह अपने मम्मी-पापा की हालत नहीं देख सका था। उसे मालूम था कि उसके गायब होने पर मम्मी-पापा पर

कोई अनहोनी ही बीत रही होगी। लेकिन उसे याद आया, मम्मी ही तो अक्सर कहती थी, 'बेटा मुसीबत के समय घबराना नहीं चाहिए। अपने में एक नई चेतना जाग्रत करनी चाहिए। तुम आखिर एक साहसी बच्चे हो।'

यह याद करके कुमार सब दुःख-दर्द भूल गया। उसके अन्दर नई चेतना का संचार हुआ।

सीढ़ी से उतरकर जैसे ही उसके पांव फर्श पर पड़े उसे अपनी बांयी तरफ से तरह-तरह की आवाजें सुनाई पड़ने लगीं। उसे ऐसा लगा जैसे कोई पास ही में धीमे-धीमे चीख रहा हो। उसने उस आवाज की दिशा में कदम बढ़ाया। वह डर रहा था कि कहीं यह विजय की आवाज तो नहीं है? क्या वह पकड़ा तो नहीं गया? उसे अब इस बात पर मारा जा रहा हो कि तेरा दूसरा साथी कहां है। इसलिए वह चीख रहा हो। इन सब आशंकाओं से कुमार का मन बुरी तरह घबरा रहा था। यह सोचते हुए कुमार तेजी से यह सब देखने के लिए उस आवाज की तरफ बढ़ने लगा।

आगे बढ़ने पर दीवाल में एक छोटी-सी खिड़की नजर आई। दीवाल लोहे की बनी हुई थी। फर्श शीशे का बना हुआ था। उस पर कुमार के पैर बार-बार फिसल रहे थे। उसने उचककर उस खिड़की से झांका जिससे अन्दर की रोशनी छन-छनकर बाहर आ रही थी। फर्श भी हल्के-हल्के चमक रहा था।

खिड़की से झांकते ही उसे ऐसा लगा जैसे उसके पास कोई अनजाना बम फटा हो। क्षण-भर के लिए उसका सहासी दिल भी बुरी तरह कांप गया। वह उस दृश्य को न देख सका। उसने आंखें नीचे झुका लीं।

वह एक बड़ा हाल था। उसकी दीवारें शीशे की तरह चमक रही थीं। उस हाल के एक सिरे से दूसरे सिरे तक छोटे-छोटे पलंग बिछे हुए थे। उन पर कई लड़के बैठे हुए थे। उनके मुंह पर भय की रेखाएं फैली हुई थीं, क्योंकि उनके सामने एक खूंखार आदमी हंटरों से एक लड़के को पीट रहा था और चीख-चीख कर कुछ कह रहा था। वह आदमी शरीर से काला व बहुत भयानक लग रहा था। उसके जिस्म पर ही उसके रंग से मिलती हुई बनियान थी जिस पर सफेद रंग से नम्बर सात लिखा हुआ था।

हाल में जितने लड़के थे उनके जिस्म पर कपड़े के नाम पर सिर्फ चिथड़े ही लटक रहे थे और ऊपर से वह हंटरवाला उनके शरीर के चिथड़े उड़ा रहा था। कुमार इतना तो अब तक समझ गया था कि अब वह उन अपराधियों के बीच आ चुका है जो बच्चों को अगवा करते हैं। और अगवा करके उन बच्चों से अपराध का काम लेते हैं, यह अभी

तक कुमार पूरी तरह से समझ नहीं पाया था। वैसे तो आए दिन वह अखबारों और रेडियो पर बच्चों के गुम हो जाने की खबरें पढ़ता और सुनता था। पर उसे मालूम न था कि अपने भाई की खोज में उसे इस तरह के अपराधियों का सामना करना पड़ेगा।

कुमार को साहसनहीं हो रहा था कि उलटकर उस दृश्य को पुन: देख सके। तभी उस हाल में घरघराहट उत्पन्न हुई। ऐसे लगता था जैसे कोई गाड़ी चला रहा हो।

न चाहकर कुमार उस खिड़की से झांकने लगा। सामने से तीन आदमी चले आ रहे थे। एक अदमी जो बीच में था उसने आते ही हंटरवाले को इशारा किया और हंटर वाले ने अपना हाथ रोक दिया। यह देखकुमार उसे ध्यान से देखने लगा। उसने देख कि दो व्यक्ति भी बड़े सम्मान से सिर झुकाकर खड़े हैं। वह कुछ सोचता, अपने होठों में बुदबुदाया, 'कहीं यह विक्रम दादा तो नहीं हैं?'

सचमुच वह विक्रम दादा ही था। तभी विक्रम दादा ने ताली बजाई। उसके ताली मारते ही घरघाहट हुई और एक आदमी हाल में प्रविष्ट हुआ। विक्रम दादा ने उसे फिर इशारा किया।

इशारा समझते ही आने वाला पलटा और थोड़ी देर में फिर आ गया। इस बार वह अकेला नहीं था। उसके साथ तीन बच्चे भी थे, जिनके जिस्म पर चिथड़े लटक रहे थे। और उन्हें देखते ही कुमार को ऐसा लगा जैसे वह अभी फट पड़ेगा। लेकिन उसने विवेक नहीं खोया। जी कड़ा करके वह पुन: खिड़की से देखने लगा।

वह तीनों राणा, रणजीत और सुरेश ही थे जिनकी तलाश में वह और विजय आए थे। तीनों काफी कमजोर दिखाई पड़ रहे थे। उन्हें अब कोई देख यह नहीं कह सकता था कि यह वही तीनों बच्चे हैं जो कभी काफी हृष्ट-पुष्ट थे, सुन्दर और कीमती वस्त्र पहनते थे। यह देखकर कुमार की आंखें भर आईं।

तभी उसने जो देखा—वह सचमुच फट पड़ा। विक्रम दादा के कहते ही वह हंटर वाला तीनों पर कोड़े बरसाने लगा। कुमार यह देख गुस्से में चीखने ही वाला था कि संभल गया।

यही वे बच्चे थे जिन्हें मां-बाप फूलों की तरह रखते थे, उनकी मनचाही चीजें ले देते थे और आज उनकी गलती के पीछे उनका फूल सा शरीर कोड़ों की मार खा रहा है। कुमार का दिल ऐसे किया जैसे वह सब बदमाशों को अभी जाकर ललकारे और फिर हंटर मार-मार कर सबकी खाल उधेड़ दे। पर मजबूरी थी।

थोड़ी ही देर बाद विक्रम दादा के इशारे पर हंटर वाले का हाथ रुक गया और तभी कमरे में घरघराहट उत्पन्न हुई और फिर देखते ही देखते वे पलंग और सभी बच्चे

नीचे धंसते चले गए। कुमार हक्का-बक्का रह गया।

अब पलंगों की जगह एकमात्र गड्ढा उसे नजर आ रहा था। कुछ समय बाद उसे ऐसा लगा जैसे गड्ढा भरता जा रहा है। और सचमुच वहां चमकता हुआ फर्श नजर आ रहा था। थोड़ी देर पहले जो देखा था, वह कुमार को सपना मात्र लग रहा था।

वे बच्चे कहां चले गए? राणा, रणजीत और सुरेश कहां चले गए?

वार-बार उसे यह प्रश्न विकल कर रहा था। वह ऐसे साधन को ढूंढने लगा जिससे वह इन खतरनाक अपराधियों का रहस्य मालूम कर सके और सब बच्चों का पता लगा सके।

•

कुमार कुछ सोच आगे बढ़ा। थोड़ी दूर आगे जाने के बाद उसे पुन: नीचे को जाती एक सीढ़ी नजर आई। कुमार को समझ नहीं आ रहा था कि न-जाने मकान कितनी नीचे तक गया हुआ है।

वह धीमे कदमों से उस सीढ़ी से नीचे उतरता चला गया। वह इधर-उधर झांक भी लेता था कि कहीं कोई सुराग भी मिल जाए।

अभी वह विचार कर रहा था कि दायें तरफ से बच्चों की आवाज़ें सुनाई पड़ीं। वह उचक कर उधर देखने लगा और उन्हें देखने के लिए साधन तलाश करने लगा, जिसमें बच्चों को देखा जा सके।

तभी उसकी पैनी नजर एक रोशनदान पर जा टिकी। पर रोशनदान तक कैसे पहुंचा जाए? यहां वह न रस्सी से, न ईंटें रखकर चढ़ सकता था। अब फिर उसके सामने एक समस्या आन खड़ी हुई थी।

तभी उसकी दृष्टि सीढ़ियों से लगी रेलिंग पर गई जो रोशनदान की दीवाल से लगती ढलान बनाती रोशनदान तक पहुंचती थी। यह देख कुमार रेलिंग पर धीमे से पांव जमाता उचक कर उस रोशदान की दूसरी तरफ देखने लगा। इस रोशनदान पर शीशे के टुकड़े न थे, जिससे कुमार को और सुविधा हो गई थी।

और जो उसने दूसरी तरफ देखा, वह अवर्णनीय था। उस हालनुमा कमरे के भीतर सैंकड़ों बच्चे बन्द थे। उनके हाथ-पांव बंधे थे। वे बार-बार अपने हाथों और पैरों को खोलने के लिए मचल रहे थे। वे जोर-जोर से मुहँ फ़ाड़ते, फिर बन्द कर लेते थे। लेकिन कोई आवाज सुनाई नहीं दे रही थीं।

कुमार को उनका बार-बार मुँह खोलना और बन्द करना समझ में नहीं आया। और ऊपर से उनकी आवाजें भी नहीं आ रही थीं। ओह! यह बात है। उसे ख्याल आ

गया कि उस हाल में से भी आवाजें क्यों नहीं आ रही थीं, जब वह खिड़की से झांक रहा था। वह इस बात का रहस्य जान गया था। कमरा व हाल साउण्ड प्रूफ थे। इसी कारण किसी की आवाज बाहर नहीं आ रही थी। हाय! यह निर्दयी अपराधी! कुमार ने सब बच्चों पर दृष्टि घुमाई, परन्तु उसे राणा, रणजीत, सुरेश उन सब में कहीं भी नजर न आए। फिर वे लोग कहां चले गए? चलकर देखना चाहिए।

कुमार के दिमाग में अभी तक यह बात नहीं घुसी थी कि अपराधी इन बच्चों से क्या काम कराता है? वह उन्हें क्यों मारता है?

कुछ सोच कर कुमार सीढ़ियां उतरने लगा। उसके चेहरे से स्पष्ट था कि वह बहुत बड़ा काम करने जा रहा है। कुमार की दृष्टि नीचे उस हालनुमा कमरे के दरवाजे की तरफ थी जिसमें सैंकड़ों बच्चे बन्द थे।

कुमार के जाने के बाद विजय भी दूसरे मोड़ की तरफ चल पड़ा। वह भी जल्द से जल्द तीनों को खोजना चाहता था। कुमार की तरह ही आगे बढ़ने पर उसे एक सीढ़ी मिली। लेकिन विजय ने अंधेरा होते हुए भी वह सीढ़ी देख ली और ऊपर खटाखट चढ़ने लगा। सीढ़ी काफी लम्बी थी, जिस पर चढ़ते-चढ़ते उसका सांस फूलने लगा।

जहां पर सीढ़ी खतम होती थी उसके बाद आगे एक दीवाल आती थी और जिस के दायें-बायें दोनों तरफ रास्ते थे। विजय सांस थामते हुए फिर से असमंजस में पड़ गया कि किधर जाए। उसने आखिर में बायें जाने का विचार कर लिया, जहाँ पर उसे एक लम्बा-चौड़ा कमरा नजर आ रहा था।

कमरा लम्बा ज्यादा और चौड़ा कम था। दूसरी ओर भी कमरे से सटी-सटी नीचे जाने की एक सीढ़ी थी। परन्तु विजय को उसका दरवाजा नजर नहीं आ रहा था।

शायद दरवाजा दांई तरफ हो। यह सोचकर विजय उस कमरे की दीवाल के साथ सटी सीढ़ी के सहारे नीचे दाईं तरफ उतरने लगा। उस सीढ़ी के रेलिंग की ढलान के साथ-साथ एक रोशनदान था। परन्तु विजय ने उस ओर एक उचटती-सी दृष्टि डाली और नीचे उतरने लगा।

वह नीचे फर्श पर जा पहुंचा। उसे यह मकान भूलभुलैया लग रहा था। नीचे सीढ़ी के साथ सटा एक छोटा-सा कमरा था। उस कमरे का दरवाजा विजय को स्पष्ट नजर आ रहा था। उधर बढ़ने से पहले विजय ने किसी के आने की आहट ली। वह मन-ही-मन में भगवान् का शुक्रिया अदा करने लगा जिसने अभी तक उसे किसी अपराधी से

नहीं भिड़ाया था।

विजय बिना आवाज किए उस दरवाजे के पास पहुंचा और दरवाजे के भीतर झांकने लगा जो पूर्णतः खुला हुआ था। वह अन्दर देख कर चौंक पड़ा।

अन्दर एक गोरे रंग का आदमी, जो सम्भवतः कोई चीनी लग रहा था, टेबल पर न-जाने क्या कर रहा था। उसके सामने टेबल पर एक छोटा-सा रिवाल्वर रखा हुआ था।

तभी वह दूसरी तरफ़ झुका और उसने एक बोतल को मेज पर रखा। उस बोतल में कोई लाल द्रव्य सा भरा हुआ था। 'अरे यह तो खून है।' सहसा विजय के मुहं से निकल गया। परन्तु तभी उस चीनी ने बोतल पर एक लेबिल लगाया जिस पर लिखा था, 'शराब का नमूना।' यह देख विजय और भी चौंक पड़ा। उसके दिमाग में आज से कुछ माह पहले की वह खबरें गूंजने लगीं जो नकली और जहरीली शराब की थी जिसको पीने पर कई लोगों की मृत्यु हो गई थी। पुलिस ने कई जगह छापे भी मारे थे। परन्तु यह धन्धा अभी तक चल रहा था। यह देख साहसी विजय के दांत भींच गए। वह सोचने लगा, काश ! रिवाल्वर होता तो मैं इन सबको देख लेता।

वह चीनी बोतलों पर लेबिल लगाता रहा। किसी बोतल पर अब वह 'ए' लगा रहा था तो किसी पर 'एक्स'। कहीं कोई आ न जाए! झांक रहे विजय को बराबर यही डर लग रहा था।

अभी वह वहां से हटने वाला ही था कि वह चीनी झटके से उठा और अन्दरूनी कमरे की ओर बढ़ गया। विजय ने देखा, रिवाल्वर वैसे ही पड़ा था। उसने सोचा इससे अच्छा मौका रिवाल्वर उठाने का नहीं मिलेगा। अगर एक बार रिवाल्वर मिल जाए तो वह फिर इन सबको देख लेगा।

पर फिर भी यह एक बहुत बड़ी समस्या थी। विजय को यह डर था कि कहीं चीनी न आ जाए। फिर भी जो करना था, करना ही था! विजय दबे पांव रिवाल्वर की तरफ बढ़ा। अभी वह रिवाल्वर उठा भी न पाया था कि वह चीनी अन्दर वाले कमरे से आ गया और विजय ने घबराकर रिवाल्वर उस चीनी की ओर तान दिया। आखिर जो विजय ने सोचा था, वही हो गया था। रिवाल्वर चाहे विजय को चलाना नहीं आता था, पर उसे साहस का परिचय देना था। विजय रिवाल्वर को चीनी की तरफ तान कर बोला, 'तुम चुपचाप इस कुर्सी पर बैठ जाओ—अगर शोर मचाया तो रिवाल्वर चला दूंगा।'

यह देख वह चीनी कांप उठा और घबराकर कुर्सी पर बैठ गया। विजय ने रौब

मैं पूछा, 'यहां का सरदार कौन है ?'

वह कांपती आवाज में डर कर बोला, 'विक्रम दादा। तुम अभी उसके सामने बच्चे हो। उसका नाम सुनकर बड़े-बड़े अपराधी कांप उठते हैं। तुम हो कौन ?'

विजय ने कड़क कर जवाब दिया कि मैं विक्रम का काल हूं। तुम यह न भूलो कि चींटी भी हाथी को गिरा सकती है। अच्छा क्या तुम उन तीन लड़कों के बारे में कुछ बता सकते हो—जिनका नाम राणा, रणजीत और सुरेश है। विजय यह कह कर उनके हुलिए बतलाने लगा।

यह सुनकर उस चीनी की आंखें चमक उठीं ! विजय समझ गया कि वह सबकुछ जानता है। उसने उससे फिर पूछा। परन्तु उस चीनी ने कुछ न बताया। विजय उसे डराते हुए बोला, 'अगर तुमने मेरे तीन गिनने तक नहीं बताया कि वे तीनों कहां हैं—वहां पहुंचने का रास्ता कौन-सा है, तो मैं तुम्हें गोली मार दूंगा।' हालांकि यह सब बोलते हुए विजय की आवाज कांप रही थी। उसने फिर से चीनी को धमकाया।

और इसका असर भी चीनी पर जल्द हुआ। वह उसे फौरन सब कुछ बतलाने लगा। आखिर में विजय बोतल की तरफ इशारा करके पूछने लगा, 'यह क्या है ?' चीनी बोला, 'यह नकली शराब के नमूने हैं और इसपर जो 'ए', एक्स लिखा है वह शराब में असल-नकली के अनुपातों को बताते हैं।'

विजय यह सुनकर चौंका ! यह सब सुन वह सतर्क हो गया। वह जल्द से जल्द काम निपटाना चाहता था क्योंकि ज्यादा देर होने पर किसी के आने का वहां भय था। वह सोचने लगा, अगर मैं चला गया तो यह चीनी सबको बता देगा और सारे काम पर पानी फिर जाएगा।

तभी उसने अपनी जेब टटोल वह रस्सी निकाली जो रोशनदान से भागते समय अपनी जेब में ले आया था। उसने चीनी को दिवाल की तरफ मुंह करने को कहा। चीनी ने उसकी आज्ञा का पालन किया।

यह देखते ही उस चीनी के हाथ-पांव बांध दिए और उस चीनी की टाई खोलकर उसके मुंह में ठोंस दी, ताकि वह उसके जाने के बाद बोल न सके।

चीनी छटपटाता रहा और विजय दरवजा वन्द करके बाहर निकल आया। चीनी के बताए मार्ग पर बढ़ने लगा।

चीनी की बातें सही निकलीं। उस कमरे को पार करने के बाद दूसरी ओर दीवाल से लगा एक और दरवाजा था। विजय को उसी दरवाजे की तलाश थी। उसने दरवाजे को धक्का दिया और दरवाजा घरघराहट की आवाज करता हुआ खुल गया।

और विजय दरवाजा खोलकर अन्दर घुसा। हालनुमा कमरे में ढेर सारे बच्चों को देख चौंक पड़ा। परन्तु तभी किसी की आहट सुनकर वह सतर्क हो गया।

दरवाजा खुलने की आवाज सुनकर जो घरघराहट सी प्रतीत होती थी, सुनकर कुमार सीढ़ियां उतरते-उतरते रह गया और उस आवाज की दिशा में देखने लगा। वह सोचने लगा, कोई अपराधी होगा। यह देखने के लिए आड़ में आई दीवाल के कोने से उसने झांका। परन्तु वह और चौंका जब उसने विजय को दरवाजे के अन्दर घुसते देख लिया।

वह तेजी से उसी की तरफ लपका। वह जैसे ही दरवाजे के पास पहुंच दरवाजे से अन्दर झांकने लगा तभी एक घूंसा उसके मुंह पर पड़ा। कुमार उस घूंसा मारने वाले को देख बोला, 'अरे विजय, यह मैं हूं कुमार।'

'ओह !' तभी विजय बाहर आ गया। उसके हाथ में रिवालवर चमक रहा था।

'तुम यहां कैसे ? यह रिवालवर कहां से पाया ?' कुमार ने विजय से पूछा।

और विजय ने उसे सारी बात शुरु से अन्त तक बता दी कि वह यहां कैसे पहुंचा है। और उसने कैसे रिवालवर प्राप्त किया है। कुमार ने भी विजय के पूछने पर यहां तक घटित सारी घटनाएं उसे बता दीं। वह फिर अगला प्रोग्राम बनाने लगे।

तभी कुछ आहट सुनकर दोनों चौंक पड़े और बच्चों की तरफ देखने लगे, जो खामोशी से दम साधे उन दोनों को देख रहे थे। मानो समझ रहे हों कि यह भी अपराधियों के साथी हैं। कुमार उनकी बात समझता हुआ बोला—

'साथियो ! तुम्हें हम दोनों को देखकर आश्चर्य हो रहा है। पर तुम जो चीज हमें समझ रहे हो वो हम नहीं हैं। हम अपराधी नहीं हैं।'

यह सुनकर बच्चों के मुख पर सन्तोष की रेखाएं फैल गईं। आंखों में जहां डर था वहां अब चमक जाग उठी थी।

कुमार ने फिर कहना शुरु किया, 'मैं जानता हूं कि तुम सब देश के छोटे-बड़े नगरों एवं गांवों से अपहरण किए गए होंगे। पर बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि तुमने अब तक यहां से छुटकारा पाने की नहीं सोची है। और यह देश के गद्दार तुम्हें गन्दे से गन्दा काम करवाने पर नहीं चूकेंगे। क्या मैं जान सकता हूं कि तुम्हारे एक साथी को कोड़े क्यों पड़े थे ?' कुमार उन बच्चों में उस लड़के को ढूंढने लगा जिसे कोड़े पड़े थे। कुमार की तरफ अब सब बच्चे आश्चर्य से देखने लगे। कुमार उनका यूं देखना समझ कर बोला, 'मैं यह सब बातें खिड़की से देख चुका हूं जो तुम्हारे साथ हाल में घटी थीं।' फिर कुमार एक लड़के की तरफ इशारा करके बोला, 'तुम बताओ तुम्हें कोड़े क्यों पड़े थे ?'

वह उठकर बोला, 'यह बड़े दुष्ट लोग हैं। यह हमसे भीख मंगवाते हैं। यदि भीख न मांगो तो यह हमें कोड़े मारते हैं और यदि भीख में पैसे कम लाओ तो तब भी कोड़े पड़ते हैं। कभी-कभी तो यह हमारे हाथ-पांव भी काटकर भीख माँगने भेज देने की धमकी देते हैं।'

कुमार ने पूछा, 'तुम क्या अपहरण किए गए थे ?' उसने ज़बाब दिया, 'नहीं मैं और मेरा साथी विक्रम को जानते थे, एक दिन हम घर से भाग गए। हमने सोचा हम विक्रम से पैसे लेकर किसी बड़े शहर में धंधा करेंगे पर यह विक्रम बड़ा दुष्ट है। इसने हमें पैसा देने के लालच में रखा और आखिर में यह नीच काम करने को कहा। मैंने मना किया तो मुझे कोड़ों की मार पड़ी।'



यह सुनकर कुमार को राणा, सुरेश, रणजीत याद आ गए। अब उसकी आंखों के आगे रहस्य का पर्दा खुल चुका था। अब वह समझ गया था कि इन तीनों को कोड़े क्यों मारे जा रहे थे ?

कुमार ने पूछा, 'क्या तुम अपने मम्मी-पापा के पास जाना चाहते हो ?'

सब बच्चे बोले, 'हां !'

'तो सुनो, अगर तुम धैर्य और साहस से काम लो तो सब कुछ हो सकता है। तुम्हारे सहयोग की हमें बहुत जरूरत है। एक और एक मिलकर ग्यारह भी बन सकते हैं। हम सब एक हैं।'

इसके बाद कुमार और विजय ने अपना परिचय दिया।

कुमार ने उन्हें समझाते हुए कहा, 'तुम मेरी बातें गौर से सुनो और जैसा मैं कहूं वैसा करो।'

'तुम सब शीघ्र ही आजाद हो जाओगे। आखिर हम सब बच्चे साहस के पुतले हैं। कल इस देश के रक्षक होंगे।'

वह थोड़ी देर तक उन्हें समझाता रहा और फिर आगे बढ़कर विजय और कुमार उनके हाथ खोलने लगे। धीरे-धीरे सब बच्चे बन्धन-मुक्त हो गए।

अब सिर्फ एक काम रह गया था।

उन तीनों को ढूंढना !

इधर-उधर चक्कर काटने के बाद कुमार और विजय उस स्थान पर पहुंचे जिसके बारे में विजय को चीनी ने बताया था। उन्होंने दूर से ही उसका निरीक्षण किया, पर कोई खास बात नजर नहीं आई। हां, उस स्थान का रंग और आस-पास की जगहों के रंग से थोड़ा भिन्न था। दोनों उस भाग को गौर से देखने लगे। तभी कुमार उछल पड़ा।

'हमने पा लिया। हमने पा लिया ! वह रहा हैंडिल जैसा पिछले कमरों में था।' कहता हुआ कुमार विजय को उस हैंडिल के पास ले गया। विजय भी उस हैंडिल को देख चौंक पड़ा। अभी कुमार ने उसे इस बारे में बताया था।

कुमार ने पूरे दम से हैंडिल को घुमा दिया। इस बार कोई खास मेहनत नहीं करनी पड़ी। घरघराहट की आवाज के साथ कमरे वाला भाग नीचे धंसना आरम्भ हो गया।

थोड़ी देर में नीचे धंसने वाला भाग रुक गया। वह अब फर्श पर थे। कुमार ने देखा, जहां वह उतरे थे वहां दायें-बायें सीखचे लगे थे जो दूर-दूर तक चले गए थे। बायीं तरफ सीखचों के पीछे एक राहदारी निकलती थी। जहां अन्धेरा फैला हुआ था।

तभी उस राहदारी में से कड़ककर कोई बोला, 'कौन है ?' यह देखकर दोनों के चेहरे भय से सफेद पड़ गए। परन्तु कुमार को वह कोड़े मारने वाला याद आ गया जिसकी बनियान पर नम्बर सात लिखा था। वह भर्राई आवाज में बोला, 'नम्बर सात।'

'अच्छा—।' कहकर पूछने वाला आगे बढ़ गया।

सन्तोष-भरी सांस लेकर दोनों आगे बढ़ गए। वहां काफ़ी अंधेरा था। सीखचों के साथ-साथ बांयीं तरफ मुड़ गए जहां पर भी सीखचे थे और हलकी रोशनी फैली हुई थी।

इतने में उन्हें बांई तरफ कुछ आगे धमाके की आवाज आई। ऐसा लगा जैसे कोई-सीखचों को हिला रहा है। दोनों सतर्क होकर दबे पांव उस तरफ बढ़ने लगे। वहां पास जाकर जो देखा, उनके दिल खुशी से कांप उठे।

वहां सीखचों के अन्दर राणा, रणजीत, सुरेश तीनों थे। उनकी बुरी हालत थी। वह भी दोनों को देखकर चौंक पड़े। कुमार उन्हें चुप रहने के लिए धीमे से बोला, 'शी! तुम तीनों इस दशा में। उफ!'

राणा चारों तरफ डरी-डरी दृष्टि डालकर बोला, 'तुम दोनों यहां कैसे कुमार? क्या यह अपराधी तुम्हारा भी अपहरण करके लाए हैं?'

कुमार बोला, 'यदि यह हमें अपहरण करके लाते तो हम भी तुम्हारी तरह सीखचे में बन्द होते। हमारे शरीर पर चिथड़े लटक रहे होते। अगर हम भीख न मांगते तो हमें भी तुम्हारी तरह कोड़े पड़ते।'

यह सुनकर तीनों की आंखें लज्जा से झुक गईं। कुमार बोला, 'मुझे सब कुछ मालूम हो चुका है और मैं यह सब कुछ खुद अपनी आंखों से देख चुका हूं। हम दोनों तुम्हें इस कैद से छुटकारा दिलाने के लिए आए हैं।'

'क्या—?' यह सुनकर तीनों चौंक पड़े मानो उन्हें इस बात पर विश्वास न हो। वे न-जाने कितनी कठिनाईयों से उन्हें खोजने आए थे। और वह उन्हें अब तक सताते और तंग करते आए थे। यह देख तीनों की आंखें आंसुओं से भीग गईं।

दोनों देख रहे थे कि यह आंसू उनकी आंखों में पहली बार दिखाई दिए हैं। कुमार प्यार से यह सब देख बोला, 'अरे पागलो, यह तुम्हें क्या हो गया है? यह रोने-धोने का समय नहीं है। आज ही तो तुम्हारा नया जन्म हुआ है, क्या तुम कुछ करके नहीं दिखाओगे।' सुरेश और रणजीत बोले, 'कुमार, हमने तुम्हें और विजय को कष्ट दिया फिर भी तुम अपनी जान की परवाह किए बिना हमें इस कैद से छुटकारा दिलाने आए हो। हम बहुत बुरे हैं।'

'अरे तुम बुरे नहीं हो। परिस्थितियां तुम्हें बुरा बना गई थीं। पर हमने अब तुम्हारे बुराई के सब मार्ग नष्ट कर दिए—उठो! और एक हो जाओ। अब हम एक हैं।'

यह सुनकर राणा ने पूछा, 'तुम हमें इन अपराधियों के बीच से कैसे निकाल ले जाओगे।' विजय बोला, 'उसकी योजना भी हम बताते हैं।' और फिर दोनों उनको-

योजना समझाने लगे। जो कल दिन में पूरी करनी थी।

दिन निकला हुआ था। सूर्य की किरणें अभी सुनहरी दिखाई पड़ रही थीं। लेकिन यह उजाला उन दोनों के कामों में काफी बाधक सिद्ध हो रहा था। वह कहीं छुपने का स्थान खोजने लगे। जहां वह अपराधियों की नजरों से बच सकें। शीघ्र ही उन्हें वैसा स्थान मिल गया।

अभी वह अपनी योजना के बारे में विचार-विमर्श कर ही रहे थे कि उन्हें दूर से किसी के कदमों की आहट सुनाई दी। उन्होंने देखा, वे कई आदमी थे।

दोनों चौकन्ने हो गए। अब वे किसी भी तरह की मुसीबत का सामना करने के लिए तैयार थे। कुछ ही क्षणों में सब उनके सामने आकर खड़े हो गए। सभी बुरी तरह हांफ रहे थे। उनमें से एक आदमी हांफते हुए बोला, 'कमबख्त पानी में भी नहीं मिले। पूरी झील छान मारी। जरूर उन्हें कोई मगरमच्छ खा गया है।' दूसरा भर्राई आवाज में बोला, 'नहीं, इसमें जरूर उन दोनों की चाल है। वे दोनों इसी मकान में कहीं छिपे बैठे हैं।'

तभी एक आवाज सुनकर पलट कर देखने लगे। विजय और कुमार ने भी उस ओर देखा। आने वाले की आवाज गूंजी, 'तुम ठीक कहते हो नम्बर सत्ताईस। वह दोनों यहीं हैं, अभी-अभी हमें नम्बर छः के हाथों खबर मिली है कि उनमें से एक लड़का चीनी मार वाईन को नीचे रस्सियों से बांध कर उससे खुफिया रास्ते पूछ गया है। और बेवकूफो! उन दोनों ने तुम्हारी ही आंखों के सामने झील में बारूद की दो बोरियां फेंकी और तुम्हें कुछ पता न चला। उसी नम्बर छः के हाथों जब हमें खबर मिली तो हम अभी वहीं से आ रहे हैं। कल हम थोड़ी देर के लिए बाहर क्या चले गए कि सारे कामों पर तुमने पानी फेर कर रख दिया।'

सब बदमाशों के चेहरे झुक गए। एक बोला—'बॉस, हमसे गलती हो गई है।'

'गलती', वह दहाड़ा, 'हम विक्रमदादा हैं। हमारे सामने गलती शब्द का नाम मत लो। जाओ सब बच्चों और उन दोनों को देखो।' विजय विक्रमदादा का नाम सुनकर चौंका। उसने कुमार से पूछा। कुमार ने उसे सिर हिलाकर चुप रहने के लिए कहा।

थोड़ी ही देर में सब बदमाश नीचे भाग लिए। विक्रम दादा भी उनके जाते ही चला गया। अब सामने कोई न था। वे दोनों भी नीचे जल्दी-जल्दी भाग लिए।

'खबरदार! जो कोई भी हिला-डुला तो! तुम सब अपनी-अपनी जगह खड़े रहो। मेरे हाथ में रिवाल्वर है। जरा सी भी हरकत की तो गोली मार दूंगा।'

विजय ने यह कहते हुए रिवाल्वर उन अपराधियों की ओर तान दिया जो बच्चों के कमरे की तरफ भागे जा रहे थे।

अब उन्हें अपनी योजना पूर्ण होती दिखाई न दी तो उन दोनों ने सोच लिया था कि अब जो कुछ होगा मंजूरे खुदा होगा। अतः विजय ने उन सबकी तरफ़ रिवाल्वर तान दिया था। यह सुनकर सभी चौंक पड़े। विजय के हाथ में रिवाल्वर देखकर वे सब बुरी तरह घबरा गए। तभी बच्चों के कमरे का दरवाजा ठेलकर कुमार ने हल्की-सी सीटी बजाई।

'हम एक हैं।' यह नारा लगाते ही सब बच्चे दरवाज़े से बाहर निकल आए और अपनी बेल्टों से उन अपराधियों को मारने लगे जो उन्हें कोड़ों से मारते थे। बेल्टों की मार से सब अपराधी अधमरे हो गए।

कुमार के कहने पर उन्हें बेल्टों से बांध दिया गया और उनके मुँह में कपड़ा ठूंस दिया गया। सभी बच्चों के हाथ अपने दुश्मनों से बदला लेने के लिए मचल रहे थे।

तभी यह शोर सुनकर एक अपराधी न-जाने कहां से आ गया और यह सब देख कर उसने सामने दीवाल पर लाल रंग का बटन दबा दिया। उसके बटन दबाते ही नीचे से कई आदमियों के दौड़ने की आवाजें आने लगीं।

कुमार और विजय चीख कर बोले, 'साथियो, तैयार हो जाओ। अपराधी आ रहे हैं।' इतना कहते ही सब बच्चे दरवाजों के पीछे छिप गए।

उनका दिल बुरी तरह उछलने लगा। बदला लेने का समय निकट आता जा रहा था। अपराधी शायद पन्द्रह-बीस की संख्या में चले आ रहे थे। उन्हें क्या पता था कि बच्चों के हाथ खुले हैं और वे कुमार और विजय की योजना पर अमल कर रहे हैं।

उनके आते ही सब बच्चे फुर्ती से दरवाजों से बाहर निकले और उनके पैरों से चिपट गए तथा उन्हें गिराने की कोशिश करने लगे। उनके हाथों में हालांकि राइफलें थीं, पर उन्हें कुछ करने का मौका ही नहीं मिल रहा था।

उनका गिरना था कि सारे बच्चे एक साथ उन लोगों पर टूट पड़े और उन्हें मार-मार कर बेदम कर दिया। उन्होंने उन अपराधियों को उठने का मौका ही नहीं दिया।

वहां भयानक शोर मचा हुआ था। शीघ्र ही बच्चे कमरे के अन्दर से रस्सियां ले आए और उन अपराधियों के हाथ-पांव बांध दिए गए। उन सबको सभी बच्चों ने एक-एक करके अन्दर कमरों में डाल दिया।

सभी के मुख पर विजय की मुस्कान थी। चेहरे खुशी से खिले हुए थे। बच्चों को अपनी ताकत का पता चल गया था।

किसी के हाथ में बेल्ट थी, किसी के हाथ में रस्सी थी, किसी के हाथ में फर्नीचर की मोटी-मोटी लकड़ियां थीं। और कईयों ने तो उन अपराधियों से प्राप्त राइफलें भी उठा रखी थीं। वे सब बच्चे इस समय तूफान की तरह दिखाई दे रहे थे। उनका जोश इस कदर उमड़ रहा था कि वे गोलियों की बौछार पर भी नहीं रुक सकते थे। वे इस समय समुद्र का ज्वार बने हुए थे।

सब वहां जाने लगे जहां पर वे तीनों रणजीत, राणा, सुरेश बन्द थे। विजय के हाथ में रिवाल्वर चमक रहा था। कुमार का हाथ खाली था।

कुमार ने नीचे कमरे में पहुंचते ही हेन्डिल घुमाया और सब नीचे आ गए। सामने सीढ़ियों में उनकी आहट सुनकर सुरेश, रणजीत, राणा उनकी ओर ताकने लगे थे।

विजय ने देर नहीं की। उसने रिवाल्वर सीखचों पर लगे ताले पर चला दिया और सब बच्चे शोर मचाते हुए तीनों को बाहर निकाल लाए। तीनों विजय और कुमार से गले मिलने लगे। उनकी आंखें फिर भीग आई थीं।

कुमार ने उनको अभी घटित सारी घटना बता दी और खुशी से झूम उठे! बच्चों ने भी तीनों के हाथ में बैल्टें थमा दी थीं, अब सब आजाद पंछी थे। पिजरे उनके लिए खुल चुके थे। अब उन्होंने उनको पिंजरों में बन्द करना था जिन्होंने उन्हें इस कैद में बन्द कर दिया था। तभी बाहर से गोलियां चलने की आवाज आई और चारों तरफ एक लाल रोशनी-सी फैल गई। यह देख कुमार चीखा, 'खतरा! दुश्मन फिर हमला करने आ रहे हैं। विक्रम दादा को शायद सब कुछ मालूम हो चुका है। सब तैयार हो जाओ।'

गोलियों और कदमों की आवाज निकट आ रही थी। यह देख कुमार बोला, 'विजय, तुम और मैं ही इस मकान के खुफिया रास्ते जान चुके हैं। तुम इनका मार्गदर्शन करते हुए उन रास्तों से पिछली झील तक पहुंच जाना। मैं पीछे झील में कूद कर तैरता हुआ अभी पुलिस को साथ लेकर आता हूं।' फिर बच्चों की तरफ देख बोला, 'मैं जा रहा हूँ। लेकिन तुम्हें अब साहस का परिचय देना है। मेरे जाने से तुम एक ही रहोगे, अच्छा दोस्तो, चलता हूं।'

यह कहकर कुमार बाहर निकल गया और विजय सबको निर्देश देने लगा।

आधे घन्टे तक कुमार भागता रहा। उसे अपने तन-बदन का भी होश नहीं था। ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उसके शरीर में चाबी भर दी है। वह तब तक भागता रहेगा, जब तक चाबी खत्म नहीं हो जाएगी।

अचानक एक पत्थर आने पर वह लड़खड़ा गया। लेकिन गिरने से पहले उसे किसी ने पकड़ लिया। कुमार समझा, दादा आ गया है। उसके मुंह से चीखें निकल गईं। परन्तु वहां कोई नहीं था।

भागते-भागते उसे याद आया कि कैसे वह अभी-अभी गोलियों से बचकर झील में कूद पड़ा था। उसकी मंजिल अब एक ही थी—पुलिस थाना।

इसी तरह कुमार बेतहाशा भागता हुआ थाने पहुंच गया और थाने में घुसते ही बोला, 'इन्सपैक्टर साहब, चलिए।' आवाज आई 'कुमार है।' और उसने अपने मम्मी-पापा को बताते हुए कहा 'जो लड़के घर से लापता थे, वे सब एक गिरोह में फंसे हैं। मैं भी वहीं से बचकर भाग निकला हूं। उस गिरोह का सरदार विक्रम दादा है।'

कुमार बुरी तरह हांफ रहा था। इन्सपैक्टर ने उसे बड़े प्यार से पानी पिलाया और उसकी बहादुरी पर उसकी पीठ ठोकी।

थोड़ी ही देर में इन्सपैक्टर, कुमार, और कई कान्सटेबिल पूरी तरह से लैस होकर उस तरफ चल दिए जहां पहाड़ियों के बीच वह सुनसान मकान सिर उठाए खड़ा था। काफी मुश्किल से आधे घंटे के भीतर ही पुलिस फोर्स ने अपराधियों पर काबू पा लिया। विक्रम दादा ने भागने की कोशिश की, लेकिन पुलिस की गोली से बच न सका।

पुलिस ने उस मकान के भीतर से कई तहखाने ढूंढ़ निकाले जहां नकली और जहरीली शराब बनती थी। पर उन सबका सरगना विक्रम दादा अब इस दुनियां से दूर जा चुका था। दुष्टों का ऐसे ही अन्त होता है। सब कुछ बदल गया। बच्चों को उनके घर पहुंचा दिया गया। सुरेश, रणजीत, राणा भी घर आ पहुंचे थे। उनसे मिलते ही उनके घर वालों के आंसू खुशी से थमते नहीं थे। वे सब उनके पैरों पर गिर पड़े।

सब विजय और कुमार की प्रशंसा करने लगे। सुरेश के पिताजी ने जो रकम इनके लापता होने के इनाम पर रखी थी, उन दोनों में बांट दी। पुलिस ने भी उनकी काफी तारीफ की और उनका नाम वीर बच्चों में लिख लिया। सब खुशी से झूम उठे थे।

धीरे-धीरे राणा, सुरेश, रणजीत फिर से स्कूल जाने लगे। अब वह इतने अच्छे हो गए थे कि घर से भाग जाने की बात भूल गए थे। अब उनकी हर जगह प्रशंसा होती थी और सब उन्हें लाड़-प्यार करते थे। लेकिन कभी-कभी रात को सोते समय कुमार और राणा को पिछली बातें याद आने लगती थीं।

राणा कभी-कभी सपने में विक्रम दादा की शक्ल देखते ही चीख उठता था। अब वह मम्मी के साथ ही सोता था। मम्मी उसे अब बहुत प्यार देती थी। रात को चीखने पर मम्मी उसे हृदय से लगा लेती। उसका माथा चूमती। मम्मी गुस्से में बोलती, अगर अब किसी दादा ने तेरे ऊपर नजर डाली तो मैं उसकी आंखें फोड़ दूंगी।' और यह सुन राणा फिर से रंग-बिरंगे सपनों में खो जाता। उधर कुमार सपने में देखता कि गणतन्त्र दिवस पर वह और विजय वीरता एक्सप्रेस में बैठे हैं। उनकी छाती पर तमगा लगा है जिस पर लिखा है बच्चों का नाम। ●●